DATE
PAGE

① सीग़ते तैटयबा

② शिर्क की हक़ीक़त

DATE
PAGE 01

सीरते तैय्यबा और आज का वी.आई.पी कल्चर
सूरह ताहा आयत न. २५-२८ रब्बिश रहली... यफ़कहु कौली
आऊजु बिल्लाहि मिनशैतानिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमा
निर्रहीम "लकद् काना लकुम फी रसूलिल्लाहि
उस्वतुन हसन" सूरह अहज़ाब -A-33
सदकल्लाहुल अज़ीम व सदका रसूलुहुन नबीयुल करीम
अमीन, "इन्नल्लाहा....." सय्यदी या
अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह
अस्सलातो वस्सलामो अलैका या नबी अल्लाह
सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम
व अला आलिका व अस्हाबिका या हबीब अल्लाह
मौला या सल्ली वसल्लिम दाईमन अबदा अला हबीबिका
खैरिल खलकी कुल्लीहिमी
→ अल्लाह तबारक व तआला की हम्दो सना और
हुज़ूर सरवरे कायनात, ज़ीनत-ए-बज़्म-ए-कायनात
दस्तगीर-ए-जहाँ, ग़मगुसारे ज़मां, सय्यदे सरवरां
हामिए बेकसां, काईदुल मुरसलीन अहमदे मुजतबा
जनाबे मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)
के दरबारे गौहरबार में हदिया-ए-दरूदो सलाम अर्ज़
करने के बाद निहायत ही मोअज़्ज़िज़ व मोहतरम
सामईन हज़रात रब्बे ज़ुलजलाल की फज़्ल और
तौफ़ीक़ से सय्यदे आलम, नूरे मुजस्सम
शफ़ी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि के उस्वा-ए-हसना

की रोशनी आज भी हमारे पास मौजूद है। जिसके ज़रीए से हम अपने माहौल से हर आलूदगी को, हर कजी को, हर बदी को दूर कर सकते हैं। और उम्मते मुस्लिमा में वी.आई.पी कल्चर के नाम पर जो ख़ुराफात आ चुकी हैं, नाम निहाद रोशन ख्याली के धुएं से जो फिज़ाएं आलूदह हो चुकी हैं इन सब का मुकाबला सय्यदे आलम, नूरे मुजस्सम शफ़ी-ए मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके और आपकी दी हुई तालीमात से ही किया जा सकता है। कुरआने मजीद फुरकाने रशीद में रब्बे ज़ुलजलाल ने ये इर्शाद फरमाया है।

" सूरह अहज़ाब न.3

तर्जुमा: तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में, हयाते तैय्यबा में, आप के सिफातो-किरदार में बेहतरीन नमूना मौजूद है। 05:30

"लिमन काना ... आख़िर

किसके लिए यह नमूना है? जो अल्लाह से मुलाकात की उम्मीद रखता है और आख़िरत पर यक़ीन रखता है। "व ज़करल्लाह कसीरा" और रब्बे ज़ुलजलाल का बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वाला है। ख़ालिके कायनात जल्ला जलालोहू को ये अज़ल से पता था कि इंसानियत की रहनुमाई का आख़िरी पैग़ाम कुरआने मजीद फुरकाने रशीद की शक्ल में लोगों को दिया जाएगा

और उसे अज़ल से पता था कि इंसानियत की रहनुमाई का सिलसिला, इंसानियत की रहनुमाई के लिए नबुव्वत का जो सिलसिला शुरू होगा, उसका इख्तिताम सय्यदुल मुर्सलीन हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते गिरामी पर कर दिया जाएगा। इस बुनियाद पर "वही" के बंद हो जाने के बाद अल्लाह की रिज़ा के कामों को दवाम बख्शने के लिए जिस शख्सियत के किरदार को कयामत तक के अंधेरों को मिटाने के लिए अल्लाह ने चुना, वो किरदार और वो सीरत सय्यदुल मुरसलीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की है कि जमाते सहाबा आपकी सीरत को सामने रखकर अपने अतवार और किरदार को तामीर करेगी, और उन सहाबा के किरदार को देखकर "ताबईन" अपने किरदार को तामीर करेंगे। रब्बे ज़ुलजलाल को ये पता था कि अगर्चे "वही" का दरवाज़ा बंद हो चुका होगा लेकिन आख़िरी दीन सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की "जामेअ शख्सियत" के फ़ैज़ की वजह से जो सीनों से सीनों की तरफ़ मुंतकिल होता चला जाएगा और जो नस्ल दर नस्ल ज़िन्दा किरदार की शक्ल में सदियों की तारीख़ में आगे पहुंचता चला जाएगा, वो किरदार हमेशा के लिए सोसायटी के अंदर रब्बे ज़ुलजलाल की रिज़ा के उसूलों को रोशन करता रहेगा। इस बुनियाद पर सय्यदे आलम, नूरे मुजस्सम

शफीअ-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस्वा-ए-हु-स-ने, उसका इतना जानदार किरदार है कि आज के माहौल तक उस उस्वा-ए-हु-स-न के ज़िन्दा असरात हम सबको नज़र आते हैं। 09:31 और उस उस्वा-ए-हु-स-न का फैज़ आज तक की नस्लों के अंदर मौजूद है। अगर्चे 15वीं सदी वालों की मुलाकात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नहीं हुई, न सरकार को देखकर ज़िंदगी के अत्वार उन लोगों ने समझे और न ही नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठकर उमूरे दीन को इन लोगों ने हासिल किया मगर ये रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस्वा-ए-हसना की एहेक्शन है, इश्क़ और शौक के साथ इन्हें नस्लें कुबूल करती रहीं जिसके नतीजा में आज भी मुआशरे के अंदर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस्वा-ए हसना एक ज़िन्दा हकीकत की शक्ल में मौजूद है। इससे ये समझना कोई बईद (दूर) नहीं है कि ख़त्मे नबुव्वत का फैज़ नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस्वा-ए-हसना की शक्ल में जो बदस्तूर आगे पहुंचा है, कयामत तक के लिए इस फैज़ को मज़ीद आम करने के लिए हम सब पर लाज़िम है - हम उस्वा-ए हसना को मज़ीद समझें, इसके मुबल्लिग़ बनें और अमलन इस के मुताबिक ज़िंदगी

बसर करें, ताकि हम ख़ामोश हों जब भी हमारा तरीक़ा तब्लीग़ कर रहा हो कि नबी-ए-आख़िरुज़्ज़मां जो शरीयत दे कर गए हैं, वो शरीयत न जामिद है न जाम है बल्कि फंक्शनल है और हर ज़माने की ज़रूरत को पूरा करती है और आज भी उसकी रोशनी हमारे पास मौजूद है।

इस सिलसिला में कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने रशीद की ये आयते करीमा जिसमें अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया "लकद काना लकुम → यक़ीनन तुम्हारे लिए
"तुम्हारे लिए" से मुराद सिर्फ वो सहाबा-ए-किराम (रज़ि.) अलैहेमुर्रिद्वान उस वक़्त सामने मौजूद थे, वो नहीं हैं। बल्कि क़यामत तक का फर्द इस का मुख़ातिब है। क़यामत तक का हर फर्द इससे रोशनी हासिल करता है।

"लकद काना.... हसना" → तुम्हारे लिए रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी के अंदर बेहतरीन नमूना है।

जिस ने दौरे सहाबा में कुरआन पढ़ा "लकुम" ने उसे भी मुतवज्जे किया और जिसने अहद-ए-ताबईन में कुरआन पढ़ा "लकुम" ने उसे भी मुतवज्जे किया और जिसने कुरूने ऊला के बाद कुरआन पढ़ा "लकद कानालकुम कि तुम्हारे लिए, इस "लकुम" ने उन्हें भी मुतवज्जे किया और चलते-चलते आज 15वीं सदी का

मुसलमान जब कुरआन पढ़ता है तो "लकद् काना लकुम" ये अल्फाज़ उसे भी मुतवज्जे करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस्वा-ए-हसना सिर्फ पहली सदी ~~वालों~~ के मुसलमानों के लिए नही था, ये 15 वी सदी के मुसलमानों की प्यास भी बुझा रहा है। और यहाँ ही नही बाद की सदियों में भी जो पैदा होंगे "लकद् काना लकुम" के अल्फाज़ उन्हें भी मुतवज्जे करेंगे और सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम, शफी-ए-मोअज़्जम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस्वा-ए हसना उनके लिए भी मिनारा-ए-नूर का काम करता रहेगा। 13:05 इससे से यह बात सूरज की तरह ज़ाहिर है कि जिस तरह कुरआने मजीद की तालीमात हर ज़माने के लिए है, सिर्फ कुरूने ऊला की जरूरतें पूरी नही कर रही थी, आज के दुखों का इलाज भी कुरआने मजीद में मौजूद है। तो ऐसे ही सिर्फ कुरूने ऊला के इन्सान के लिए उस्वा-ए-हसना के अंदर ज़खीरा मौजूद नही था बल्कि जिस तरह उस वक्त का इंसान उस्वा-ए-हसना से मुतअस्सिर होता था और उस वक़्त के इन्सान को उस्वा-ए-हसना से रेहनुमाई मिलती थी और उस वक़्त के इंसान को कारे ज़िल्लत से सुरय्या की रिफअतों तक पहुँचाने का किरदार उस्वा-ए-हसना अदा कर रहा था आज भी ज़िल्लत मे गिरे हुए इन्सान को सुरय्या की रिफअत तक पहुँचाने की पॉवर उस्वा-ए हसना में मौजूद है।

14:02

इस से आप ये अंदाज़ा लगाएं कि रब्बे ज़ुलजलाल ने सय्यदुल मुरसलीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितनी जामेअ सीरत अता फ़रमाई और आप के किरदार मे वुसअत कितनी है और आपके अख़्लाक़ आली कितने हैं और आपके फ़ज़ाईल, हर सोच की परवाज़ से बुलंद कितने हैं, कि सिर्फ़ उस वक़्त का इन्सान ही आप की सीरत के कानून और अख़्लाक के उसूलों को देखकर मुतअस्सिर नहीं हो रहा था, आज का इंसान भी, इतनी सदियों के गुज़र जाने के बावजूद जिस वक़्त रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस्वा-ए-हसना को देखता है, अगर हठधर्म न हो, ज़िद्दी न हो, मरीज़ न हो तो वो भी समझेगा कि यक़ीनन अगर ज़र्रे को आफ़ताब बनाया जा सकता है और कांटे को गुलाब बनाया जा सकता है, तो वो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रोशन सीरत को सामने रखने से इतना बड़ा इंक़िलाब लाया जा सकता है। इस से ये बात बिल्कुल वाज़ेह हुई कि जिस किरदार को रब्बे ज़ुलजलाल सारी इन्सानियत के सामने बतौरे चेलेन्ज पेश कर रहा है कि जिसने भी सदाक़त वसूल करनी हो, शुजाअत लेनी हो, फ़रासत लेनी हो, ज़हानत लेनी हो, संजीदगी हासिल करनी हो रोशनी पाना हो, खुशबू हासिल करना हो, वो किसी और किरदार की तरफ़ मत देखे, वो मेरे नबी अलैहिस्सलाम

के किरदार की तरफ देखे। जो रब्बे ज़ुलजलाल ने फिर इस किरदार को कितना उम्दा बनाया, कितना जामेअ बनाया तन्क़ीद से कितना बुलंद बनाया और ऐबों से कितना पाक पैदा किया और इसके अंदर जामिअत कितनी रखी और हर अहद के मुसलमानों पर ये लाज़िम कितना करार दिया कि तुमको इस उस्वा-ए-हसना की अज़मतें बयान करना है इस की हक़ीकतों को ज़ाहिर करना है और ग़ैर-मुस्लिमों के सामने 16:15 इस उस्वा-ए-हसना के फज़ाईल रोशन करने हैं ताकि जो कलिमा-ए-इस्लाम पढ़ने वाले हैं वो तो सबक़ हासिल करेंगे ही, साथ ही जो अभी इस्लाम से बाहर हैं उन पर भी इस उस्वा-ए-हसना के असरात मुरत्तब हों, तो वो कलिमा पढ़ते हुए सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम शफ़ी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस्वा-ए-हसना से रोशनी हासिल करना शुरू कर दें। इस बुनियाद पर जो शरीअते मोतह्हरा में मक़ामे नबुव्वत का बयान और मन्सब-ए-रिसालत की जो अज़मत है वो एक ऐसा मज़मून है कि जो उस्वा-ए-हसना की तब्लीग़ और उस्वा-ए-हसना पर अमल की तेहरीक का पहला सबक़ है, जिस शख़्स के किरदार की अज़मत और अख़्लाक़ की अज़मत को दुनिया के सामने ज़ाहिर किया जाए, यक़ीनन कायनात उन्हीं से मुतास्सिर होती है और अगर मआज़ अल्लाह बुग़्ज़ हो, हसद हो

और सती (साधारण, मामूली) सा मुआमला ज़ाहिर करने की तेहरीक़ हो, तो फिर वो अज़मतें जो शरीअत की मंशा में हैं, वो लोगों तक नहीं पहुँचाई जा सकती। इसलिए आज सय्यदे आलम, नूरे मुजस्सम, शफ़ी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुकद्दस सीरत का पैग़ाम, उस्वा-ए-हसना की तेहरीक़ और माहौल से हर किस्म की आलूदगी और ख़ुराफ़ात की जड़ी बूटियों के ख़ात्मे के लिए रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वो रोशन किरदार, कि जो हर ऐब से पाक है, हर कजी से मुबर्रा है, हर आलूदगी के मुकाबले में उसके अंदर सुथरापन है, उस को उन्हीं ख़ुतूत पर बयान करने की जरूरत है जो हक़ीक़त के मुताबिक सिलसिला है और जो सुफ़्फ़ा से लेकर आज तक मुस्लिम उम्मत का तुर्रा इम्तियाज़ है। इसमें ~~अब~~ अगर इस तरह की तक़सीम की जाए कि मआज़ अल्लाह, नमाज़, रोज़े के लिहाज़ से तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म है, शरीअत के उमूर के लिहाज़ से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जानते हैं मगर दुनिया के उलूम के लिहाज़ से दुनिया वाले बेहतर जानते हैं, तो फिर उस्वा-ए-हसना को जो पेश करने का मंशा-ए-ख़ुदावन्दी था, वो सारे का सारा सिलसिला, उसकी हिकमतें और उसके तकाज़े ख़त्म हो जाएंगे।

18:40

इस वाकये हक़ीकत ये है कि हमारे नबी अलैहिस्सलाम का उस्वा-ए-हसना इतना जामेअ है कि अगर मस्जिद में सज्दा करना है तो उसका बयान भी उस्वा-ए-हसना में मौजूद है और अगर इवाने सद्र में बैठकर हुकूमत करनी है तो उसका तरीका भी उस्वा-ए-हसना में मौजूद है। अगर मस्नदे तद्रीस पर बैठ कर पढ़ाना है उस का तरीका भी उस्वा-ए-हसना में मौजूद है, अगर खेत में काश्तकारी करनी है तो उसका तरीका भी उस्वा-ए-हसन में मौजूद है, छोटे-बड़े तमाम अहकामात का मुकम्मल बयान उस्वा-ए-हसना में मौजूद है। 19:17

दुनिया के उमूर की वज़ाहत, तशरीहात सारी की सारी उस्वा-ए-हसना के नीचे है। ये तक़सीम तब होती जब इस्लाम का ताल्लुक ~~सिर्फ~~ दुनियावी उमूर से हट के सिर्फ दीन के उमूर के साथ होता। तो जब इस्लाम दीन और दुनिया दोनो में रेहनुमाई करता है और दोनो के लिए अहकाम इस्लाम के अंदर मौजूद है, तो फिर क्या इस्लाम दीन में नबी अलैहिस्सलाम को आईडियल करार दे कर, दुनिया में किसी और को आईडियल बनाना चाहता है? हरगिज़ ऐसा नहीं है। हमारे नबी अलैहि सलातो वस्सलाम के लिए रब्बे जुलजलाल ने अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए, उनसे ये वाज़ेह तौर पर पता चलता है "लकद... हसना" कि अगर तुमने इबादत करनी है

इस्लाम का
स्जिद में
-ए-हसना में
हुकूमत करनी
मौजूद है।
है उस का
अगर खेत में
उस्वा-ए-हसना
का मुकम्मल
:17
री की सारी
जब होती जब
से हट के
ब इस्लाम
और दोनों के
हैं, तो फिर
को आईडियल
आईडियल बनाना
नबी अलैहि
ने अल्फ़ाज़
ता चलता है
आदत करनी है

मस्जिद में, जो उसके लिए भी इन्हीं का तरीक़
तुम्हारे लिए बेहतरीन ~~नमूना~~ तरीक़ा हो जो बाइसे
निजात है, अगर दुनियावी उमूर का एहतिमाम करना
है - सियासते मदनीया है, तदबीरे उमूर है, तदबीरे मंज़िल है
लोगों के दुख-सुख में शरीक होना है और मुआशरे को
अमन का गहवारा बनाना है और ज़ुल्मो-सितम की
जड़ें काटनी हैं और कायनात में हुक्मरानी करनी है,
तो हर लिहाज से वो सारे का सारा सबक़ भी
सय्यदे आलम, नूरे मुजस्सम, शफ़ी-ए-मोअज़्ज़म
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोशन तरीक़े में मौजूद
है। "लकुम" में ख़िताब है कयामत तक की इंसानियत को
आगे "लिमन काना... कसीरा" इसमें लकुम का बयान है
हर इंसान, उसके लिए सबक़ है इसमें, फिर बतौरे
ख़ास - किस के लिए ? फरमाया जो इसे देख कर
असर क़बूल करता है। दावत तो सबको है मगर
ज़िक्र, तारीफ के तौर पर, उनका होगा जो हक़ को
क़बूल करते हैं। जिस तरह कि क़ुरआने मजीद को
कहा गया "हुदल्लिन्नास" → ये हिदायत है सारे इंसानों
के लिए, लेकिन जहाँ तारीफ की वहाँ कहा गया
हुदल्लिल मुत्तक़ीन → ये हिदायत है परहेज़गारों
के लिए कि जिन्होंने उस हिदायत को क़बूल कर लिया
तारीफ करते वक़्त तज़किरा उनका होगा।

इस वास्ते, आख़िर में, रब्बे ज़ुलजलाल ने फरमाया "लेमन काना ... आख़िर"। जो भगौड़ा है, सर्कश है वो इस उस्वा-ए-हसना पर अमल नही करता और जो आख़िरत की फ़िक्र रखता है, इस (उस्वा-ए-हसना) पर अमल जरूर करता है, जो रब का ज़िक्र करने वाला है "ज़ाकरल्लाहा कसीरा" → अल्लाह का जो ज़िक्र करता है याद इलाही करता है। उसके लिए दर-ए-रसूल को छोड़ना मुमकिन नही है। याद रब को करता है, मगर देख के नबी अलैहिस्सलाम को करता है। उस्वा इनका है, तरीक़ा इनका है, सामने आईडियल ये है और ज़िक्र अल्लाह का करता है, तो यहां पर ये जो तक़सीम थी उस को भी खत्म कर दिया गया कि ये कोई न कहे, कि ये नबी की पार्टी है और फलां, अल्लाह की पार्टी है। रब्बे ज़ुलजलाल ने फरमाया मेरा ज़िक्र करता ही वो है जो मेरे नबी के तरीक़े को सामने रखता है। "तुम्हारे लिए रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में बेहतरीन नमूना है।" अब जिसने नमूने पर चलना है। जिनका नमूना है, उनकी तरफ तवज्जो जो करनी है, उनकी तरफ ध्यान करना है, उनकी तरफ सोच को लगाना है, उन्हें याद करना है, उनका दिल में इश्क़ रखना है। जिनका इश्क़ न हो, उनकी तरह इंसान अपने आप को करने को मजबूर ही नही कर सकता।

जिन से प्यार
जैसे वो बातें
मैं भी बैठूं
जैसे उन के ब
पहले इश्क़ उ
अल्लाह तक
इस बुनियाद
रब्बे ज़ुलजला
मुझ तक आ
बेख़बर है।
आ जाए नमा
उस्वा-ए-हसन
क्योंकि पहले
उनका तसव्वुर
भी होगा, उन

जिन से प्यार हो जाता है, तो फिर बंदे का दिल करता है कि जैसे वो बातें करें, मैं भी वैसे ही करूँ। जैसे वो बैठें, ऐसे मैं भी बैठूं, जैसे उन के कपड़े ऐसे मेरे भी कपड़े हों, जैसे उन के बालों का अंदाज़ था वैसा मेरा भी हो। पहले इश्क़ उन का होगा, फिर उनकी अदा होगी और फिर अल्लाह तक रसाई होगी।

इस बुनियाद पर इसे उस्वा-ए-हसना के पैग़ाम में भी रब्बे ज़ुलजलाल ने वाज़ेह कर दिया कि जो डायरेक्ट मुझ तक आने का पैग़ाम देता हो, वो उस्वा-ए-हसना से बेख़बर है। जिन के नज़्दीक ये हो कि उनका ख़याल आ जाए नमाज़ में, तो नमाज़ टूट जाएगी। वो फिर नमाज़ उस्वा-ए-हसना के मुताबिक पढ़ कैसे सकेगा? क्योंकि पहले तो जिनका तरीक़ा है उनका ख़याल आएगा उनका तसव्वुर आएगा, सिर्फ तसव्वुर नहीं उनसे प्यार भी होगा, उनसे इश्क़ भी होगा। और फिर उनके इश्क़ से उनके तरीक़े पे चलेगा तो आगे अल्लाह की ज़ात तक पहुंचेगा, तो रब्बे ज़ुलजलाल ने फरमाया "लकद... कसीरा" फरमाया जो मेरे नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम के तसव्वुर और याद में बैठ कर, उनके तरीक़े को अपनाता है, ये कौन इंसान है? फरमाया ये ही तो फ़िक्रे आख़िरत वाला है, ये ही अल्लाह वाला है, ये ही रब का ज़िक्र करने वाला है। इस बुनियाद पर ये [illegible] की बातें

इस्लाम के मिजाज़ में नहीं हैं। जो उस्वा-ए-हसना का पैग़ाम नबी-ए-अकरम, नूरे मुजस्सम, शफ़ी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत का पैग़ाम है रब्बे ज़ुलजलाल ने उसका तज़किरा करते हुए भी ये वाज़ेह फरमा दिया – सीरत इनकी है किरदार इनका है तरीक़ा इनका है। नतीजा इसका क्या होगा? फरमाया नतीजा ये होगा कि जो बंदा इस पर चलेगा वो कैसा है? वो फ़िक्रे आख़िरत भी रखने वाला है, रब्बे ज़ुलजलाल का ज़िक्र भी करने वाला है। २५:४७

इसमें "फ़ी रसूलिल्लाह" नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र करते हुए सिर्फ "रसूलिल्लाह" कह दिया गया है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम नहीं लिया गया है। सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम शफ़ी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उन औसाफ़ में से जो आपके लिए ख़ास हैं, उनका भी तज़किरा नहीं किया गया। मिसाल के तौर पर यूँ कहा जाता कि "लक़द काना लकुम फ़ी मुहम्मदिन..." तो नाम आ जाता। ऐसा भी नहीं कहा गया और ये भी नहीं कहा गया कि "लक़द काना लकुम फ़ी ख़ातमिन नबीय्यीन उस्वतुन हसना" जो सारे नबियों के ख़ातिम हैं वो तो एक ही ज़ात है जो हमारे आक़ा की ज़ात है। नाम नहीं होता तो वस्फ़

ए-खास है वो ज़िक्र कर दिया जाता। वो भी ज़िक्र नहीं किया गया। न ये कहा गया "हज़रते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है" और न ये कहा गया कि "खातिमुन्नबीयीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है" और न ये कहा गया कि "रहमतुल्लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है। आप के सिवा कोई रहमतुल्लिल आलमीन भी नहीं। तो "रहमतुल्लिल आलमीन" से भी आप का ही तज़किरा हो जाता, लेकिन यहाँ पर रब्बे ज़ुलजलाल ने क्या उस्लूब इस्तिमाल किया। आप मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी हैं, आप खातिमुन नबीयीन भी हैं, आप रहमतुल्लिल आलमीन भी हैं (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मगर रब्बे ज़ुलजलाल ने फरमाया "लकद काना लकुम फी रसूलिल्लाहि उस्वतुन हसना"। अगर्चे जितने रसूल हैं सब ही अल्लाह ही के रसूल हैं। सब पर रसूलुल्लाह का लफ्ज़ बोला जा सकता है और सब को रसूलल्लाह कहा जाता है, सब को नबिउल्लाह कहा जाता है। मगर खालिके कायनात जल्ला जलालोहू ने खिताब कर के कयामत तक की इंसानियत को आगे ज़िक्र लफ़्ज़े रसूल से कर के मेरे नबी अलैहिस्सलाम

का, रब्बे ज़ुलजलाल ने वाज़ेह कर दिया "ऐ कयामत तक
के इंसानों, जब रसूलल्लाह कहा जाए, अगर्चे रब के और
भी सेकड़ों रसूल हैं, हज़ारों नबी हैं, मगर तुम्हारी सोच
सीधी, ये लफ़्ज़ सुनते ही, मदीना शरीफ पहुंच जाना चाहिए।
लफ़्ज़े रसूल तुम्हारे ज़हनों में इतना पक्का होना २७:१२
चाहिए कि 'रसूलल्लाह' का लफ़्ज़ सुनते ही, तुम्हें फौरन याद
अपने मेहबूब की आना चाहिए। लफ़्ज़े रसूल
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िक्र से [जैसे नाम लें
किसी का तो फौरन उनका ख्याल आता है], किसी का
लक़बे खास ज़िक्र करें तो फौरन उनका ख्याल आता है
तो फरमाया: तुम्हारे नज़दीक शाने रिसालत, इन के
लिहाज़ से इतनी वाज़ेह होना चाहिए कि जिस वक़्त भी
'रसूलल्लाह' कहा जाए, अगर्चे तुम मानते सारे रसूलों
को हो, मगर तुम्हें पता होना चाहिए कि यहाँ पर हमें
हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की इक्तिदा का हुक्म
नहीं दिया जा रहा, यहाँ पर हमें हज़रते ईसा
अलैहिस्सलाम की पैरवी का हुक्म नहीं दिया जा
रहा, यहाँ पर हमें हज़रते नूह अलैहिस्सलाम की
पैरवी का हुक्म नहीं दिया जा रहा, यहाँ पर हमें
हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पैरवी का हुक्म
नहीं दिया जा रहा, उनके नक्शे कदम पर चलने का
हुक्म नहीं दिया जा रहा, वो सारे मोहतरम हैं लेकिन

यहाँ पर जो हमें ~~ब~~ हुक्म दिया जा रहा है, तो वो आमिना के लाल, हज़रते मुहम्मदे मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी का हुक्म दिया जा रहा है ताकि दुनिया कयामत तक ये समझे कि हमने रब तक पहुँचना है तो इनके ज़रीए से पहुँचना है।

अब देखो दीन का मिजाज़ कैसा है? अभी ये नारा-ए-रिसालत लगा तो आप ने कहा 'या रसूलल्लाह' सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। तो "कुछ लोग" कहते हैं अल्लाह के तो सैंकड़ो रसूल हैं, तुम किन को पुकार रहे हो? तुम 'रसूलल्लाह' कह के किन का ज़िक्र कर रहे हो? रब के तो सैंकड़ो रसूल हैं, तो तुम "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" कहो तो पता चल जाए कि किस रसूल की बात हो रही है। तो मैं कहता हूँ आयत पढ़ो, कुरआन का तो मिजाज़ ही ये है। अब "लकद काना लकुम फी रसूलिल्लाह" में ये नहीं है 'फी मुहम्मदिर्रसूलिल्लाह' सिर्फ है 'फी रसूलिल्लाह'। मगर कोई एक भी ऐसा नहीं कि जिसे ये सुन के शक गुज़रता हो कि पता नहीं बात किस की हो रही है। सबको पता है, बात हमारे मेहबूब की हो रही है। मिजाज़ ही कुरआनो सुन्नत का ये है कि लफ्ज़े रसूल सुनते ही हमारी सोच मदीना शरीफ जाएगी, लफ्ज़े रसूल सुनते ही। अब जब कुरआन उतरा, तो उस वक्त से, ~~अब~~ अब तो सदियाँ गुज़र गई हैं।

कुरआन उतरा जब अस्सी चन्द साल हुए हमारे नबी अलैहिस्सलाम को ऐलान नबूव्वत किए हुए। 29:40 उस वक़्त के लोगों को भी ये यक़ीन है कि अगर्चे पहले लफ़्ज़े "मुहम्मद" नहीं आ रहा, मगर "लक़द काना लकुम फ़ी रसूलिल्लाह" से मुराद न हज़रते आदम अलैहिस्सलाम हैं, न ही हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम हैं, न इनके दरमियान का कोई नबी मुराद है। मुराद है तो हमारे नबी अलैहिस्सलाम हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुराद है।

इस बुनियाद पर आज की इस तरह की जो बदमज़ा गुफ़्तगू है और जो फीका अंदाज़ है, उसकी शरीअत में कोई इजाज़त नहीं है। जिस वक़्त दिल सुथरा हो, दिल साफ़ हो, रास्ते खुद बखुद मोअय्यन हो जाते हैं कि जो शख़्स रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कह रहा है, बोल रहा है, यक़ीनन ये और किसी से बात नहीं कर रहा बल्कि ये अपने नबी अलैहिस्सलाम से बातें करता जा रहा है।

अब देखते हैं आप, एक जगह लोग बैठे हों, एक शख़्स को उसका बेटा आकर कहे, "अब्बू"। अब अगर्चे वहाँ पर सैंकड़ो "अब्बू", बाप बैठे हैं, पर उसे पता है कि मैं सैंकड़ो की बात नहीं कर रहा, मैं तो अपने की बात कर रहा हूँ। अगर्चे वो नाम लेकर नहीं कह रहा, वो सिर्फ अब्बू कहता है, वो सिर्फ अपने बाप को बाप कह रहा है

30:58

रे नबी अलै-
उस वक़्त के
ने फ़ज़े मुहम्मदं
रसूलिल्लाह"
हज़रत ईसा अलैहिस
मुराद है। मुराद
म्मद मुस्तफा

की जो
है, उसकी
बका दिल
मोअय्यन हो
लल्लाह अलैहि
ये और किसी
अलैहिस्सलाम

ठे हो, एक शख्स
। अब अगर्चे
से पता है कि
ने की बात कर
ह रहा वो सिर्फ
बाप कह रहा है
30:58

नाम नहीं ले रहा, उसे पता है कि मैं औरों की बात नहीं कर रहा, मैं अपने की बात कर रहा हूँ। और उसके बाप को पता है कि अगर्चे यहाँ सेकड़ों अब्बू बैठे हैं मगर ये मेरी बात कर रहा है। इस बुनियाद पर अगर नियत में फ़ुतूर न हो, किसी तरह की कोई उलझन है ही नहीं। रब्बे ज़ुलजलाल ने अब यहाँ वाज़ेह किया है "लकद काना रसूलिल्लाह" हर मस्लक का बन्दा जब आयत पढ़ेगा अपने ज़रूरत के पेशेनज़र वो ये समझेगा, ये बताएगा कि यहाँ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नक्शे कदम की बात नहीं हो रही, यहाँ तो आमिना के लाल के नक्शे कदम की बात हो रही है। इस बुनियाद पर मुतलकन रिसालत को नाज़ है हमारे नबी अलैहिस्सलाम पर, और मुतलकन रिसालत के तज़किरे से ज़हन जाता ही इस तरफ है और पहुँचता ही यहाँ है कि अगर्चे हर पैगंबर का नक्शे कदम अज़ीम, उनका उस्वा-ए-हसना अज़ीम, मगर उन सारे, जो जितने भी उस्वा-ए-हसना हैं, उस से जो जामेअ उस्वा-ए-हसना है जो गुलदस्ते की शक्ल है, जिसमें हर फूल भी है, हर खुशबू भी है, हर चमक भी है, हर तजल्ली भी है ये वो उस्वा-ए-हसना है, जो रब्बे ज़ुलजलाल ने मेरे नबी अलैहिस्सलाम को अता फरमाया है 32:08

चूँकि इस उस्वा-ए-हसना ने कयामत तक की

जरूरते पूरी करना थीं, इसने कयामत तक के मसाइल का हल करना था। अब जिन की उम्मत पहुँचनी हो १९वी सदी तक २५वी सदी तक और उस्वा-ए-हसना जो है वो सिर्फ पहली सदी तक गुज़ारा कर सके, फिर उन को उस्वा-ए-हसना की कयामत तक के लिए रब्बे ज़ुलजलाल दावत क्यों देता कि ऐ २०वी सदी के मुसलमानों मसअला हल करना है तो मेरे नबी के कानून को देखलो उन की शरीअत को देखो, उनके तरीक़े को देखो, तो रब्बे ज़ुलजलाल ने पहले जामेअ ही इतना बनाया है कि जो भी सिद्क़ दिल से अपनी बिमारी का इलाज चाहेगा, हठधर्म, ज़िद्दी नही बनेगा ३२:४८ तो नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम का उस्वा-ए-हसना ज़रूर उसकी रहनुमाई करता नज़र आएगा।

ख़ालिके कायनात जल्ल जलालोहू ने कयामत तक के लोगों को जन्नत लेने के लिए मुतवज्जे सरकार सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की तरफ कर दिया। "फी रसूलिल्लाहे" नबी अलैहिस्सलाम में। हांलाकि कुरआन कुरआन है और कयामत तक के लिए मौजूद है तो ख़ालिके कायनात जल्ल जलालोहू ने महज़ कुरआन की दावत नही दी। महज़ कुरआन की दावत होती तो फिर नबी अलैहिस्सलातोवस्सलाम के उस्वा की तरह मुतवज्जे न किया जाता। फिर दावत एलल कुरआन होती, कि कुरआन

पढ़ो और जन्नत पाओ, कुरआन की तरफ आओ और जन्नत पाओ। कुरआन की तरफ आने का काम होगा ही तब, जब उस्वा-ए-हसना सामने होगा। उस्वा ए हसना जो है वो शख्सियत का होता है। ३३:४४ उस्वा ए हसना बशरियत का होता है, उस्वा-ए हसना एक पैकर का होता है। तो ये वजह है कि रब्बे ज़ुलजलाल ने अपने नूर को लिबासे बशर में जल्वागर किया कि कयामत तक, जब वही बंद हो चुकी होगी, कुरआन उतर चुका होगा इसके बाद भी जब लोगों को जरूरत पड़ेगी कि इस उतरे हुए कुरआन पर प्रैक्टिकल करना हो तो कैसे करें, तो रब्बे ज़ुलजलाल फरमा रहा है, न नई वही आएगी, न नया रसूल आएगा। तुमने मेरे नबी अलैहिस्सलाम की अदाओं को देखते जाना है और उतरे हुए कुरआन पर अमल करते चले जाना है। उनकी अदा ये साबित करेगी कि जो मुझ पर उतरा है ये कयामत तक के लिए काफी है। उनकी अदा ये साबित करेगी कि दावत इलल कुरआन है ही दावत इलर्रसूल और दावत इलर्रसूल है ही दावत इलल-कुरआन। और ये मजमूई तौर पर येहैं दावत इलल्लाह, अल्लाह की तरफ ले जाने वाला अंदाज।

इस बुनियाद पर वो एक नजरिया जो कुरआने मजीद में ज़िक्र है, उसका सबसे बड़ा प्रैक्टिकल

हमारे नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम के पैकर में है और वो भी इस अंदाज में, ये नहीं कि कुरआन उतरा तो फिर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वो अंदाज सिखी, नहीं! हजरते आइशा सिद्दीका रदियल्लाहु अन्हा कहती हैं, "उनका (हमारे नबी का) अख़लाक कुरआन है"। और खुल्क वो होता है जो तबियत में हो मिजाज में हो, जबिल्लत में हो, जिस कैफियत पर बंदा पैदा हो, वो अरबी ज़ुबान मे खुल्क कहलाता है तो रब्बे ज़ुलजलाल ने जो कुछ कुरआन में रखा, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तबीयत में पहले ही डाल दिया था। नाज़िल कुरआन बाद में हुआ लेकिन उसकी जो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कैफियत में असर है वो सारे का सारा पहले मौजूद है। इसवास्ते अल्लाह तआला फरमाता है नूरुन-अला-नूर। एक नूर मिजाज में रखा, दूसरा नूर "वही" से नाज़िल कर दिया। फरमाया गया है कि चालीस साल तक अगर वही न भी आती, अंदर वाला नूर खुद ही बाहर निकलना शुरु हो जाता।

इस बुनियाद पर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में उस्वा-ए-हसना रखा गया और "मे" 36:07 के आगे मुज़ाफ मेहज़ूफ होंगे ग्रामर के लिहाज से →
आपके बोलने में, आपके खाने में, आपके पीने में,

लकुम

आपके चलने में, आपके उठने-बैठने में। "लकद काना फी रसूलिल्लाहि"। लफ़्ज़े रसूल से पहले वो एक लफ़्ज़ जो, जिस तरह की माहौल होगा उसी तरह का वो ग्रामर के लिहाज़ से निकाला जाएगा। जिस तरह देखते हो न "बिस्मिल्लाह" → तो इस का तर्जुमा करते वक्त अगर आप बिस्मिल्लाह कहेंगे खाना खाते वक्त तो अब तर्जुमा क्या होगा → अल्लाह के नाम से खाना खाता हूँ। अरबी ज़बान में मुताअल्लक आअकुलु महज़ूफ होगा ?
"बिस्मिल्लाहि आअकुलु" → अल्लाह के नाम से खाता हूँ। अगर लिखते वक्त बिस्मिल्लाह कहेंगे तो मतलब होगा ?
"बिस्मिल्लाहि अक्तुबु" → अल्लाह के नाम से पढ़ता हूँ। ये वुस्अत है अरबी ज़ुबान की ये हुरूफ़ किसी "फ़ेल" के मुताअल्लिक होते हैं। इस बुनियाद पर जामेअ अंदाज़ है कुरआने मजीद का फरमाया तुम जिस जेहत को देखोगे कि बिमारी आ जाए तो वक्त कैसे गुज़ारना है? फरमाया ?
"लकद काना लकुम फी रसूलिल्लाहि उस्वतुन हसना"
नबी अलैहिस्सलाम की हालते मर्ज़ में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना मौजूद है। नबी अलैहिस्सलाम की हालते सेहत में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना मौजूद है। नबी अलैहिस्सलाम बाज़ार से गुज़रे हैं तो गुज़रने में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना मौजूद है।

इस बुनियाद पर जामेअ कुरआनी निज़ाम को

जिस पैकर ने प्रेक्टिकल कर के समझाया है, उस प्रेक्टिकल के अंदाज को उस्वा-ए-हस्ना से ताबीर किया गया है। और आज हमारे लिए यह लाज़िम है कि हम अपने हर किस्म के करन्ट इश्यूज़ में, हालाते हाज़िरा में, हर जेहत में उस उस्वा-ए-हस्ना को सामने रखें और उसके मुताबिक अपनी ज़िन्दगी बसर करें।

सय्यदना उमर रदियल्लाहु अन्हो मेरे नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम के घर के ऊपर जो एक जगह थी जहाँ सरकार तशरीफ फरमां थे, उसमें दाखिल हुए 38:01 तो अंदर कोई आराइश वाली चीज़ तो हुजरे मौजूद नहीं थी। खजूर की पत्तों की बनी हुई रस्सी से बुनी हुई चारपाई या बुनी हुई चटाई दोनो रिवायात मौजूद हैं, उनके निशान नबी अलैहिस्सलाम के जिस्म-ए-पुरनूर में बने हुए थे। न चटाई के ऊपर चादर थी न बदन पर कमीज़ थी। तो हज़रते उमर रदियल्लाहु अन्हु कहने लगे "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, वो कहाँ कैसर-ओ-किसरा की सहूलतें और कहाँ दोनो जहाँ के सरदार का ये हुजरा आप हुक्म दें कम-से कम कोई आराम का बिस्तर तो आप के लिए तैयार कर लें। तो नबी अलैहिस्सलाम ने फरमाया, "ऐ उमर अभी वो जाहिलियत वाली सोच तुम्हारी खत्म नहीं हुई। और फरमाया कि मेरा और दुनिया का तअल्लुक क्या है? मेरा और दुनिया का

तआल्लुक तो ऐसा ही है जैसे कोई सवार गुज़र रहा हो, दोपहर का वक़्त हो, धूप हो तो दरख़्त के नीचे बैठ जाए। अब उसका दरख़्त से कोई प्यार नहीं होगा, उसका तो तआल्लुक मंज़िल से है। वो दरख़्त के साथ दिल लगाके नहीं बैठेगा। उसे तो निकलना है और मंज़िल की तरफ जाना है। इस वास्ते मेरा और दुनिया का आरज़ी सा तआल्लुक है। मैं क्या बन्दोबस्त करूँ अपने लिए और क्या अपने कमरे के अंदर में जाकिए सोफे रखूँ और क्या मैं अपने लिए मखमल और रेशम के बिस्तरों का एहतिमाम करूँ। फरमाया, वो दुनिया वाले हैं उनके लिए सबकुछ दुनिया में ही है जो कुछ है। रब्बे ज़ुलजलाल ने हमारे लिए आख़िरत का बन्दोबस्त किया हुआ है। तो ये सय्यदे आलम, नूरे मुजस्सम, शफ़ीए मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वो अंदाज़, वो दरबारे शाही कि कैसर ओ-किसरा, जिन की ग़ुलामी में आ जाएं, जिनके सामने घुटने टेक दें, वो दरबारे शहनशाहे आलम का कि दुनिया के बड़े-बड़े शहनशाह, जिनका कलिमा पढ़ने में फ़ख़्र महसूस करें, उन की अपनी, उस दरबारे शाही की जो मामूल है, उस के अंदर सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम, शफ़ी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो अंदाज़ रखा है, उस अंदाज़ के

पेशे-नज़र आज के वी.आई.पी कल्चर के ख़ात्मे की बात की जा सकती है। 40:35 सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम शफ़ी ए मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास माले ग़नीमत आया। हज़रते सय्यदना अली रद्रियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा, "ऐ फ़ातिमा, (रद्रियल्लाहु तआला अन्हा) तुम्हारे अब्बा जी के पास बहुत सी लौंडियां (ख़ादिमा) आ गई हैं। तो तुम जाओ, तुम भी सवाल करो, कोई ख़ादिमा तुम्हें दे दें तुम्हारा ये हर वक़्त काम-काज इतना ज़्यादा है। जैसा कि दूसरे मुक़ाम पर हदीस मे ये मौजूद है कि निशान पड़ चुके थे हाथों पर, चक्की चलाने के और निशान पड़ चुके थे पानी भरे हुए मश्कीज़े उठाने के। तो वो कायनात के सरदार की शहज़ादी हज़रते फ़ातिमा रद्रियल्लाहु अन्हा जब नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम के पास गईं और सवाल किया तो मेरे मेहबूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ फ़ातिमा! मैं तुझे इस से अच्छा तोहफ़ा देता हूँ। क्या करोगी तुम ख़ादिमा का? अपना काम तुम ख़ुद करो। तुम जब सोने लगो तो सुब्हान अल्लाह पढ़ो, अल्हम्दो लिल्लाह पढ़ो, अल्लाहो अकबर पढ़ो। वो तस्बीहे फ़ातिमा का दर्स दिया, उनको वापस कर दिया।

आज किसकी बेटी की शान हज़रते फ़ातिमा रद्रियल्लाहु अन्हा के मुक़ाबले में लाई जा सकती है? और किसकी मुट्ठी में वो 41:51 ख़ज़ाने हैं जो ख़ज़ाने मेरे नबी

अलैहिस्सलाम
अगर आज अप
सकता हूँ, मैं इन
मगर कयामत तक
उन के लिए एहु
फिर किस तरह के
अंदाज़ के फिर
मेरी बेटी। तू मे
और मेरा उस्वा
सरकारे दो आल
सल्लल्लाहु अलै
ए-अमी ने कह
एक ये कह रह
तो मैं उहद पहा
जो मोबाइल अ
साथ चलता जा
करना पड़े कि बाप
के किसी को दूं।
बसेरा हो। उहद
तो सारा सोने का
कहा, "ऐ अल्लाह
मैं एक दिन भूर

अलैहिस्सलाम की मुट्ठी में थे। इस के बावजूद ये समझा
अगर आज अपनी बेटी को जो मैं चाहूँ जो जन्नती महल दे
सकता हूँ, मैं इनके लिए सारे एहतिमाम कर सकता हूँ।
मगर कयामत तक की उम्मत की बेटियों को ख़्याल आएगा
उन के लिए एहतिमाम फिर कौन करेगा? उन के लिए
फिर किस तरह के प्रोटोकॉल होंगे? उन के लिए किस
अंदाज़ के फिर एहतिमाम होंगे? इस बात से फरमाया
मेरी बेटी। तू मेरी बेटी है और मुझे बड़ी अज़ीज़ है
और मेरा उस्वाए हसना तुम्हारे लिए सामने है ५२:२५
सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम शफीए मोअज़्ज़म
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर जिब्राईल
ए-अमीं ने कहा था कि रब सलाम भी कह रहा है और
रब ये कह रहा है कि ऐ मेहबूब अगर तुम चाहो
तो मैं उहद पहाड़ सोने का न बना दूँ कि ऐसा सोना
जो मोबाइल सर्विस पर हो। तुम जिधर जाओ ये भी
साथ चलता जाए। ५२:५३ तुम्हें ये भी तकल्लुफ न
करना पड़े कि वापस आऊँ मदीना शरीफ और सोना काट
के किसी को दूँ। जहाँ तुम्हारा डेरा हो, वहाँ उहद का भी
बसेरा हो। उहद साथ साथ चले। मेहबूब अगर चाहो
तो सारा सोने का बना दूँ। तो मेरे नबी अलैहिस्सलाम ने
कहा, "ऐ अल्लाह, मुझे इस सोने की जरूरत नहीं।
मैं एक दिन भूखा रहूँगा, एक दिन खाना खा लूँगा।

मैं इस अंदाज़ मे ज़िंदगी बसर करूँगा। इसकी जो दूसरी हिकमतें थीं वो तो अपनी जगह रह गईं, मगर कयामत तक नादारों के साथ जो हमदर्दी कर दी मेरे नबी अलैहिस्सलाम ने, फ़रमाया जिनके पास कयामत को कुछ नहीं होगा, कयामत तक के लिए जो नादार लोग हैं, उन्हें ये तो सहारा मिलेगा कि अगर हम भूखे हैं, तो क्या हुआ, हमारे नबी अलैहिस्सलाम ने भी पेट पे पत्थर बाँध के खन्दक खोदी थी। तो हम भूखे हैं तो कोई बात नहीं, ये भूख तो हमारे नबी अलैहिस्सलाम ने भी काटी है। सरकार चाहते उहद सोने का होता, मगर फरमाया फिर मेरी उम्मत के घर सोने के नहीं होंगे तो उनके दिलों में ख्याल आएगा। उनके दिलों मे तड़प होगी। तो सरवरे आलम नूरे मुजस्सम शफ़ीए मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने उस्वा-ए-हसना से, अपनी ज़िंदगी से, ज़िंदगी के शबो-रोज़ से इस अंदाज़ से आगे पैगाम पहुँचाया कि आज भी अगर इन उमूर की तरफ एक इंसान तवज्जो करता है तो उसके ग़म खत्म होते हैं, दुख दूर होते हैं उसे वाकई हौसला मिलता है कि कोई बात नहीं, ये मेयार नहीं अल्लाह के राज़ी होने का कि ज़रूर पैसा ही हो तो रब राज़ी होता है। अब सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कितना रब राज़ी है लेकिन सरवरे आलम

नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने उस्वा-ए-हसना से, यहाँ तक कि कई कई दिनों तक उज्वाजे मोतहहरात के घर में चूल्हा नहीं जला, खाने पकाने के लिए था ही कुछ नहीं। पानी था या खजूर, उस पे गुज़ारा होता रहा। सरवरे आलम नूरे मुजस्सम शफी-ए मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये पैग़ाम दिया ताकि मुवासात हो, हमदर्दी हो और इस तरह उम्मत जब गुज़ारा कर रही हो, उनके लिए हौसला हो कि कोई बात नहीं है हमारे लिए हमारे नबी अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में बेहतरीन नमूना मौजूद है।

मोहतरम सामईन हज़रात बुखारी शरीफ में हज्जतुल विदा के मौके का एक अहम वाकिआ मौजूद है जिस वक्त रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काबातुल्लाह के पास ज़मज़म का पानी पीने के लिए आगे बढ़े, तो ज़मज़म का कंट्रोल हज़रते अब्बास रदियल्लाहु अन्हु के पास था। चूँकी पहले हज़रते अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहु तआला अन्हु के पास था, तो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के बाद ये वज़ारत हज़रत अब्बास रदियल्लाहु अन्हु के पास थी, जाहिलियत में भी, और जब उन्होंने कलिमा पढ़ा तो फिर भी ये बदस्तूर उन्ही के पास शोबा रखा गया। अब फतह मक्का का मौका है, हज्जतुल विदा के मौके पर जब नबी अलैहिस्सलाम तो

वस्सलाम ने पानी माँगा, तो हज़रते अब्बास रद्दियल्लाहु अन्हु ज़मज़म के कुंए के पास खड़े थे। चचा हैं नबी अलैहिस्सलाम के और सरकार के उम्मती भी हैं। तो जब नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने पानी का तकाज़ा किया, तो हज़रते अब्बास रद्दियल्लाहु अन्हु ने चाहा कि मैं ज़रा खुसूसी अंदाज़ में, VIP तरीके से सर्विस करूँ अपनी खिदमत पेश करूँ। तो कहा अपने बेटे फज़ल से कि जाओ अपनी अम्मी के पास, वो जो खास किस्म का पानी है न उम्मे फज़ल के पास, वो पानी नबी अलैहिस्सलाम के लिए लेकर आओ। ज़मज़म का पानी हम सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पिलाएं। तो नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फरमाया मुझे यही पानी पिलाओ, यहीं से पिलाओ जहाँ से सभी लोग पी रहे हैं। हज़रते अब्बास ने कहा, नहीं! फज़ल तुम जाओ। [फ़ज़ल बेटे हैं जिनकी बुनियाद पर आपकी अहलिया को उम्मे फज़ल कहा जाता है।] फ़ज़ल जाओ अपनी अम्मी के पास, सरकार ने पानी माँगा है, तो वो जो खास पानी वहाँ रखा हुआ है, वो पानी लाओ। 47:00 नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम को ज़मज़म का पानी पिलाएं। तो नबी अलैहिस्सलाम ने फरमाया, "मुझे यहीं वाला पानी पिलाओ। तो उन्होंने कहा, "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस पानी में सारे हाथ डालते हैं, तो हमने वो मख्सूस

पानी रखा हुआ है। वो ला कर हम आपको पिलाते हैं। तो नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने तीसरी बार फरमाया, "मुझे यहीं से पिलाओ। अब उन का ख्याल था कि आप के लिए कोई एहतिमाम हम करें, कि यहाँ से तो सारे ही पानी पी रहे हैं, और वो डोल मँगा जिस से पानी कुंए से निकाला जा रहा था फरमाया मुझे इस से पिलाओ। अब वो (हज़रते अब्बास) चाहते थे कि खास एहतिमाम किया जाए। मेहबूब अलैहिस्सलाम ने जब तीसरी मर्तबा फरमाया तो हज़रते अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने वही पानी पेश किया। सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम शफीए मोहुज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वही पानी जहाँ से आम लोग पानी पी रहे थे, वो पानी पिया। एक रिवायत में है कि वो डोल दे दिया, हज़रते अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने, नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम को तो ~~सर~~ सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस से पानी लेकर पी लिया। अब यहाँ पर मुहद्दीसीन ने, बुखारी के शारिहीन ने यह भी लिखा कि असल नज़ाफत है, तहारत है और जब तक कोई वाज़ेह तौर पर गड़बड़ नजर न आए तो पानी पाक है तो पाक ही समझा जाएगा। 48:30 और उस पर यही हुकम लगाया जाएगा। तो ठीक है अगर्चे आम लोग पी रहे हैं मगर पानी तो पाक है। तो सय्यदे आलम

नूरे मुजस्सम शफीए मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कयामत तक के लिए VIP कल्चर के खात्मे का ऐलान करते हुए फरमाया → मैं रसूलों का सरदार हूं। जिस मश्कीज़े और डोल के पास बिलाल खड़े हो कर, बिलाल बैठ कर पानी पिएंगे, मैं भी वहीं पानी पी लूंगा। हुज्जतुल विदा का मौक़ा है, हजारो लोग जहां आए हुए है, मैं अपने लिए कोई खुसूसी एहतिमाम नहीं करने दूंगा। हज़रते अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते रहे बार बार या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका वसल्लम, ये करीब ही तो घर है उम्मे फज़ल के पास वो मख्सूस पानी है। वो फज़ल जाते हैं, पानी लेकर आते हैं। तो नबी अलैहिस्सलाम ने फरमाया नहीं नहीं। ये यहाँ से, जहाँ से आम लोग पानी पी रहे हैं, मैं भी यहाँ से पानी पीता हूँ। इसके बाद मेहबूब अलैहिस्सलातो वस्सलाम लोगों के पास आए जो कुंए से पानी निकाल रहे थे और फरमाया शाबाश! करो करो अच्छा कर रहे हो। पानी निकाल रहे हो, अमल-ए सालेह कर रहे हो। शाबाशी भी दी उनको, उनका हौसला बढ़ाया, उनको दाद दी और उसके बाद ~~फरमाया~~ अपने कंधे की तरफ इशारा किया और फरमाया → अगर ये ख़तरा मुझे न होता कि तुम मग़लूब न होजाओ, तो मैं नीचे उतरता कुंए में 50:07, मैं भी रस्सा यहाँ रखता जो रस्सा रख के, पानी खिंच कर बाहर निकाला जाता है।

ह अलैहि
चर के खात्मे का
सरदार हूँ।
खड़े हो कर,
नी पी लूंगा।
जहाँ आए हुए
नहीं करने दूंगा।
कहते रहे बार बार
, ये करीब ही
स पानी है।
बी अलैहिस्सलाम
आम लोग पानी
इसके बाद
पास आए जो
या शाबाश।
रहे हो, अमल-
उनको, उनका
के बाद ~~फरमाया~~
रमाया - अगर
हो जाओ, तो मैं
यहाँ रखता। जो
जाता है।

फरमाया मैं भी रस्सा यहाँ रखता और पानी बाहर निकालता मगर मैं क्यों नहीं उतर रहा, कि अगर मैंने रस्सा रखा, तो हर एक को तड़प होगी कि मेरी इक्तिदा करे। फिर तुम्हें कोई ड्यूटी नहीं करने देगा। फिर तुम मग़लूब होगे, लोग ग़ालिब आ जाएंगे, फिर ड्यूटी वालों को ड्यूटी कोई नहीं करने देगा, फिर यहाँ भीड़ हो जाएगी। ये सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता है कि मेरी अदाओं पर उम्मत चलती कैसे है। मैं रस्सा रखने की देर होगी तो हर कंधा रस्से के लिए तैय्यार हो जाएगा। तो हज़ारों लोगों के लिए एक रस्सा पूरा कैसे आए? और फिर यहाँ सब कंट्रोल कैसे हो सके? और किस तरह यहाँ पर तुम अपना नज़्मो नसक चला सको? अगर तुम्हारे मग़लूब हो जाने का मुझे खतरा न होता कि तुम मग़लूब हो जाओगे, तो मैं जरूर तुम्हारी हौसला अफ़ज़ाई के लिए, मैं भी पानी खींच कर निकालता बाहर और मैं भी बताता लोगों को इस जेहत में भी जो तालीम है वो तुम्हारे सामने रखता, मगर मुझे ये खतरा है कि जब मैं रखूँगा तो हर कंधा ही तैय्यार हो जाएगा। वो अमल किए बग़ैर नहीं जाएंगे। वो सारे तैय्यार हो जाएंगे, तो फिर पानी पीना तो एक अलैहदा मामला है। उस से बढ़ कर, निकालने का मामला बन जाएगा। इस वास्ते मैं रस्सा नहीं रख रहा।

लेकिन तुम ये समझो कि मुझे तुम्हारा अमल पसंद कितना आया है। तुम जो ड्यूटी कर रहे हो, वो ड्यूटी कितनी अच्छी है। तो सय्यदे आलम, नूरे मुजस्सम शाफ़ीए मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस, अपनी ख्वाहिश का इज़हार कर के भी ये वाज़ेह किया कि मैं सारे रसूलों का सरदार, मैं नबियों का ईमाम और मैं सारे जहांनों की रहमत और मैं ख़त्मे नबुव्वत के ताज वाला, लेकिन दिल मेरा भी करता है कि जहाँ मेरी उम्मत के ये कारकुन इस कुंए से पानी निकाल रहे हैं, मैं भी डोल निकालूँ। ताकि पता चले मेरी उम्मत को कि मुझे कितनी हमदर्दी है उम्मत के कारकुनों के साथ और उम्मत के मुख़्तलिफ उमूर चलाने वालों के साथ और साथ फिर इस चीज़ को भी वाज़ेह कर दिया कि ऐसे मामले पर फिर वहाँ नज़्मो नसक का भी ख्याल रखना चाहिए, ईंतिज़ामात का भी ध्यान रखना चाहिए।

तो इस लिए भी हमारे नबी अलैहिस्सलाम ने बड़ी शख़्सियात के लिए, जो हक़ीक़त में उम्मत में बड़ी हैं, जो बाइसे रश्क़ है, जो बाइसे तक़द्दुस है, जो बाइसे तबर्रुक है कि वो लोगों के इस पहलू का भी ख्याल रखें। कहीं ऐसा न हो, जिस की बुनियाद पर औरों के लिए तकलीफ का बाइस बन जाए और औरों के लिए कोई, किसी लिहाज़ से प्रोब्लम बन जाए।

तो पाक मेहबूब अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने ये भी

...मल पसंद कितना
...ही कितनी अच्छी
...े मोअज़्ज़म
...ी ख्वाहिश को
...े रसूलों का
...ानों की रेहमत
... दिल मेरा भी
...ार से पानी
...जा चले मेरी
...त के कारकुनों
...चलाने वालों के
...कर दिया कि
...ी ख्याल रखना
...हेगा।
... बड़ी
...बड़ी हैं, जो
...से तबर्रुक है
... कहीं ऐसा
...कलीफ का
...कसी लिहाज़े

... ने ये भी

वाज़ेह फरमा दिया कि मेरी उम्मत मेरी दिवानी कितनी है, कि उन में ये जज़्बा बड़ा है, जैसे मैं करूँगा वैसे मेरी उम्मत भी करेगी। अगर्चे मैं बतौरे आदत करूँ, फिर भी वो ज़रूर करेंगे। एक है बतौरे इबादत करना, एक है बतौरे आदत करना। आदत भी सरकार की कितनी अज़ीम आदत है। उस में भी 'उस्वा' मौजूद है। अगर मैं रस्सा रखता जाऊँगा तो मेरी उम्मत के लिए तो मेरी ज़िंदगी मे बेहतरीन नमूना मौजूद है। वो सारे तड़पेंगे कि हम भी ये काम करें, लेकिन इंतिज़ामी मसाअला है, फिर तुम्हारे लिए यहाँ पर कंट्रोल करना मुश्किल हो जाएगा। तो ये कैसी रोशन ज़िंदगी है कि जहाँ खड़े हो जाएं, दिन हो, रात हो, हज़र हो, सफर हो, हज हो, नमाज़ हो। जिस जेहत में जहाँ भी खड़े होते हैं, वहाँ ही कायनात के लिए सबक़ मौजूद है। वहाँ ही रोशनी है। हर मिनट में, हर सेकंड में, उस सेकंड से पहले भी सबक़, उस सेकंड के से बाद भी सबक़। दुनिया-ए-कायनात के अंदर कोई इंसान ऐसा नही गुज़रा कि जिस की एक-एक अदा मे इतनी रोशनी हो, जितनी रोशनी रब ने हमारे नबी अलैहिस्सलाम की अदाओं मे अता फरमाई है। दुनिया में कोई इंसान ऐसा नही गुज़रा कि जिस के उस्वा-ए-हसना को यूँ मेहफ़ूज़ किया गया हो, जैसे हमारे नबी अलैहिस्सलाम के उस्वा-ए-हसना को मेहफ़ूज़ किया गया है। और मेहफ़ूज़

सिर्फ किताबों में ही नहीं किया गया, मेहफ़ूज़ अमल की पावर से किया गया है। अब कितने लोग तुम में से हैं जिन्होंने कोई किताब सीरत की नहीं पढ़ी और कोई किताब उस्वा-ए-हसना की नहीं पढ़ी, मगर चेहरे पर दाढ़ी सजाई हुई है, सर पे ईमामा है, सच बोलते हैं, अदबो एहतिराम करते है। छोटों का ख्याल करते हैं, बड़ों का अदब करते हैं। अगर्चे सीरत की किताब कोई नहीं पढ़ी, मगर सीने में ये सबकुछ मौजूद है। तो पता चला उम्मत ने अमल कर-करके ही नस्लों को आबाद कर दिया है। बादवाले पहलों को देखते हैं, उन की अदाओं से अदाएं सीखते चले जाते हैं। 54:49
तो ये है सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम शाफ़ी ए मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वो उस्वा ए हसना कि जो खामे नबुव्वत की तालीमात को खुद बखुद उजागर करता जा रहा है। वही का दरवाज़ा बंद हो गया। सदियों पहले बंद हो गया। पहले कभी "वही" के बगैर इतनी सदियों तक गुज़ारा नहीं हुआ था, जितनी सदियों में इस उम्मत ने गुज़ारा कर के दिखा दिया है। "वही" का दरवाज़ा बंद है। न खुलेगा, न वही आएगी। हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम भी जब आएंगे तो बहैसियत हमारे नबी अलैहिस्सलाम के दीन के मुबल्लिग बन के आएंगे 55:19
वही का दरवाज़ा बंद होने के बावजूद आज तक उम्मत जो है फंक्शनल है और उम्मत के अंदर जो दीन की रूह

मौजूद है, ये किरदार हैं मेरे नबी अलैहिस्सलाम के उस्वा-ए-हसना का कि सरकार के साथ इश्क इतना किया है लोगों ने, देखे बग़ैर इश्क किया है। सूरत देख के इश्क किया था जिन लोगों ने उनका तो अंदाज़ ही बड़ा है आज भी जो पैदा होते हैं, देखे बग़ैर ही प्यार करते हैं। सुन्नत पर अमल करते हैं, सुन्नत अपनाने की दावत देते हैं, सुन्नत को खुद अपनाते हैं। तो ये सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम, शफीए मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वो रोशन उस्वा-ए-हसना है कि जो हर सदी में उम्मत की ज़रूरतों को पूरा करता नज़र आ रहा है। ५६:०२

मोहतरम सामईन हज़रात, इस सिलसिला में हमें बतौरे एक हदफ के अपनी आदात का सर्वे करना चाहिए। अपने घरों के हालात का जाएज़ा लेना चाहिए, तलाशी लेना चाहिए। जो औरों की बातें हो, उन सब बातों की जड़ें काट के (उन जड़ी-बूटियों की), अपने घरों में इत्तिबाते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पनीरी के मज़ीद बीज काश्त करने चाहिए, ताकि हर उगने वाला फूल, नस्ले नौ, यंग जनरेशन, उनके अंदर वो चलने फिरते गलियों में मदीना शरीफ की बहारों की आजाने दे रहे हों। और इससे आज बातिल परस्तों को मग़रिब के हरकारों को, यहूदो-हुनूद के एजेंटों को

शिकस्त देने की ज़रूरत है, जो समझते हैं कि शायद इस दीने इस्लाम की मुद्दत खत्म हो चुकी है। सदियाँ गुज़र गई हैं, अब इन्हे कोई नया सबक़ पढ़ाया जाए। हम अमले सालेह से, सीरत पे, उस्वा ए हसना पे अमल कर के उनको बताएं कि हमें नया सबक़ मंज़ूर ही नहीं है, हमें वही सबक़ काफी है जो नबी अलैहिस्सलाम ने दिया था। हमें किसी नई सीस की ज़रूरत नहीं, हमें माजूने मदीना काफी है। वो मदीना शरीफ में जो रूहों का इलाज कर दिया गया, उस शहरे शिफा/शफा के अलावा हमें किसी किस्म की किसी पुड़िया की कोई ज़रूरत नहीं। इस मे हर दुख का इलाज, हर बिमारी का इलाज और हर दिन जो सूरज तुलूअ होता है, उस दिन की ज़रूरतों का मदावा है, सामान है, वो सारे का सारा हमारे नबी अलैहिस्सलाम के उस्वा-ए-हसना में मौजूद है। 57:45

आज जिन हालात में हम पिस रहे हैं (मआज़ अल्लाह) ये सारा उस्वा-ए-हसना से हट जाने का नतीजा है।

शिर्क की हक़ीकत

नहमदहू वनुसल्लि ,वनुसल्लिमू अला रसूलेहिल करीम
अम्मा बाद . फ़आऊज़ुबिल्लाहि मिनशैतानिर्रजीम
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
"इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम"
सदकल्लाहुल अज़ीम व सदक़ा रसूलोहुन्नबीयुल करीम

तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं, जिसने अपने मेहबूबे करीम , रऊफ़ुर्रहीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वो अज़ीमुश्शान कलाम अता फरमाया जो हमेशा लोगों की रेहनुमाई फरमाता रहेगा। कुरआने करीम मुश्काने हमीद हबीबे किब्रीया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वो अज़ीमुश्शान मोजिज़ा है जो इल्मो-इरफान का अफताबे जीहांताब है। इसी कलाम की तासीर ने हज़रते सय्यदुना उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के क़ल्बे अनवर पर वो असर किया कि उन्होंने हमेशा के लिए हुज़ूर की ग़ुलामी इख़्तियार करली। यही वो बुलंद रुत्बा आली कलाम है जिसने हज़रते ज़ुबैर बिन मुतअम रदियल्लाहु तआला अन्हु को दोजहां के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कदमों से हमेशा के लिए वाबस्ता कर दिया। रहमान और रहीम परवरदिगार अज्जवजल ने अपने बन्दो की रेहनुमाई और उनकी हक़ीकी फलाहो कामरानी के लिए मेहबूबे

करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम के क़ल्बे अनवर पर वो बुलंद रुतबा कलाम नाज़िल फरमाया जिसमें ज़िंदगी की हरारत और हिदायत का नूर दोनों यकजां हैं। फारान की वादियों से क़ुरआन का चश्मा-ए फैज़ क्या फूटा कि इस से उलूम व फुनून के दरिया बह निकले और न जाने कैसे-कैसे बे-नामो निशान क़ुरआने करीम के फैज़ से लोगों के ईमाम व पैशवा बन के उभरे। जब लबों पर इन मुकद्दस हस्तियों का नाम-ए-मुबारक आता है तो बिला इख़्तियार "रदियल्लाहु अन्हुम" और "रहमातुल्लाहि अलैहि" जबान से निकल जाता है। अलगर्ज़ जिन लोगों के दिलों में क़ुरआने करीम की तासीर का तीर फज़्ले ईलाही और निगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत से पैवस्त हो गया, यक़ीनन वो कामियाब होगए। रिफअतों और बुलंदियों को पा गए। दुनिया में आने का मक़सद पूरा कर गए और मंज़िले मक़सूद तक पहुँच गए। क़ुरआने करीम वो प्यारी किताब है (Ayat) CH-२-२ जिसमे शक की गुंजाइश नहीं। क़ुरआन वाज़ेह दलील और नूर है, क़ुरआन शिफा है, क़ुरआन सारे जहां वालों के लिए नसीहत है, क़ुरआन पिछली किताबों की तस्दीक़ करता है, क़ुरआन मुफस्सल किताब है 03:७८ क़ुरआन मुबारक है, क़ुरआन करीम है, क़ुरआने पाक में हर खुश्को-तर चीज़ का बयान है। क़ुरआने पाक ने हर वक़्त

ग़ौरो-फ़िक्र की दावत पेश की। अल्लाह तआला की
तरफ़ रुजूअ लाने की तरग़ीब दिलाई। लेकिन हर पढ़ने
वाला और कुरआने पाक में सतही नज़र करने वाला
ये न समझे कलाम-ऐ-ईलाही की तिलावत करने वाले
तमाम ही अफ़राद मक़सद को पा लेंगे। नहीं। ऐसा
नहीं। खुद कुरआने मजीद ने इसकी तर्दीद की।
चुनाँचे इर्शाद हुआ →
"बहुत से लोग इस कुरआन से गुमराह हो जाते हैं।
और बहुत से लोग इससे हिदायत पाते हैं।"
सवाल ये है, बहुत से लोग कुरआन पढ़ कर गुमराह
क्यों होते हैं? इसकी वजह क्या है?
इसकी वजह मुफ़स्सिरीन ने ये बयान की कि वो
कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने हमीद को पढ़ते तो हैं लेकिन
उनका दिल नूरे कुरआन से मुनव्वर नहीं होता।
वो कुरआन की आयतों का ग़लत मतलब और
मफ़हूम समझ लेते हैं। ग़लत तर्जुमा और
ग़लत मफ़हूम, समझने की वजह वो गुमराह हो जाते हैं।
चुनाँचे ऐसा ही एक गिरोह गुज़रा जिसने
कुरआने करीम की एक आयत पर नज़र करते हुए
दूसरी आयत का इन्कार कर दिया। इस गिरोह
के तफ़सीली हालात बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने माजा
और दिगर हदीस की किताबों में मौजूद हैं।

05:07
30/03/19/23:52

अल्लामा ईमाम अब्दुर्रहमान बिन जोज़ी अल बग़दादी अलैहिर्रहमा जिन का सने विसाल 597 हिजरी है। आज से 800 साल कब्ल। आप ने अपनी मशहूर और माअरूफ़ किताब "तल्बीसे इब्लीस" लिखी। यह अरबी में किताब है। इस किताब में आप खारजियों के हालात बयान करते हैं। खारजी वो लोग थे जो हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में पैदा हुए। ये कलिमा भी पढ़ते थे, नमाज़ें भी पढ़ते थे, कुरआन की तिलावत भी करते थे बल्कि इस कद्र शिद्दत के साथ कसरत से अल्लाह की इबादत करते कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा ने जब इस गिरोह को देखा तो आप फरमाते हैं, "मैंने इन (खारजियों) से बढ़कर इबादत में कोशिश करने वाली कौम न देखी। सज्दों की कसरत की वजह से इन की पेशानियों पर ज़खम पड़ गए थे।" लेकिन कुरआने मजीद फ़ुरकाने हमीद ग़लत समझने की वजह से ये (खारजी) ऐसे गुमराह हुए- ऐसे गुमराह हुए कि इन्होंने (खारजियों ने) हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु और तमाम सहाबा-ए-किराम पर शिर्क का इल्ज़ाम लगा दिया और वो (खारजी) कहने लगे कि हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम से खारिज हैं [नाऊज़ो बिल्लाहि मिन ज़ालिक] वो (खारजी) जिस आयत को बुनियाद बना रहे थे,

वो कुरआने
"फ़ैसला करने
हज़रते अली रदि
झगड़े की खा
किसी को फ़ैसल
कहने लगे 'फ़ैस
हालांकि इस
का यह मतलब
वाला अल्लाह
जो शख्स फ़ैस
कुरआनो-हदीस
फ़ैसला करने
लेकिन वो (खा
अली रदियल्ल
रदियल्लाहु तआ
अब्बास गए, और
बात है तुम सह
लगाते हो, इन्हें
जो बहुत कसरत
ये बज़ाहिर
लेकिन कुरआन
गुमराह हुए।

..03/18 07:30
..92

...ाहादी अलैहिर्रहमा
...ाज से 800 साल
...रूफ किताब
...े किताब है।
...त बयान करते है।
...ियल्लाहु तआला
...भी पढ़ते थे,
...त भी करते थे
...रत से अल्लाह
...बिन अब्बास
...गिरोह को देखा
...ों) से बहकर
...खी। लफ्ज़ों की
...र ज़खम पड़ गए
...द गलत
...से गुमराह हुए-
...ों ने) हज़रते
...तमाम सहाबा-ए-
...और वो (खारजी)
...तआला अन्हु
...हि मिन ज़ालिक]
...द बना रहे थे,

वो कुरआने मजीद फुरकाने हमीद की आयत ये है।
"फैसला करने वाला तो सिर्फ अल्लाह है।" [सूरह गाफिर आयत 12]
हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने एक झगड़े को खत्म करने के लिए फैसला करने के लिए किसी को फैसला करने वाला मुकर्रर किया। ये खारजी कहने लगे 'फैसला करने वाला तो सिर्फ अल्लाह है।' हालांकि इस आयत का यह मतलब नहीं। इस आयत का यह मतलब है कि "हकीकी तौर पर फैसला करने वाला अल्लाह तआला है"। हकीकी हुकम वही है। और जो शख्स फैसला करे, इंसानों में से, उसे चाहिए कि कुरआनो-हदीस के मुताबिक फैसला करे। हकीकी फैसला करने का इख्तियार अल्लाह तआला को है। लेकिन वो (खारजी) न समझ सके। तो हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रते अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म दिया। हज़रते अब्बास गए, और उनसे (खारजियों) से पूछा कि क्या बात है तुम सहाबा ब:डर पर शिर्क का इल्ज़ाम क्यों लगाते हो, इन्हें मुश्रीक क्यों कहते हो? तो वो खारजी जो बहुत कसरत से अल्लाह की इबादत करने वाले थे, बज़ाहिर कलिमा पढ़ने वाले भी थे। लेकिन कुरआन गलत समझने की वजह से गुमराह हुए। वो (खारजी) कहने लगे जब

अल्लाह तआला फरमाता है कि फैसला करने वाला सिर्फ वही है, तो फिर हज़रते अली ने कैसे फैसला करने वाला मुकर्रर किया ? हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फरमाया, ज़रा ये बताओ, अगर मैं तुम्हें कुरआन से साबित कर दूं कि इंसानों में से फैसला करने वाला मुकर्रर किया जा सकता है, क्या तुम अपनी बात से रुजूअ कर लोगे ? तो वो (खारजी) कहने लगे - हाँ, हम कर लेंगे। बताइए कुरआन की आयत। तो आपने सूरतुन्निसा की आयत न.35 की तिलावत फरमाई। "आयत 35"

तर्जुमा :- जब मियां-बीवी के दर्मियान झगड़ा होजाए और तुम इनके दर्मियान सुलह करना चाहो, तो एक हकम (फैसला करने वाला) शौहर की तरफ से मुकर्रर हो और दूसरा हकम (फैसला करने वाला) बीवी की तरफ से मुकर्रर किया जाए।"

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फरमाया। ऐ खारजियों! ज़रा सोचो, रब्बुल आलमीन दो हकम (दो फैसला करने वाले) मुकर्रर फरमा रहा है। तो अगर अल्लाह के सिवा किसी और को फैसला करने वाला मुकर्रर करना शिर्क होता तो कभी कुरआन शिर्क की दावत न देता। और वही मुराद है, हकीकी फैसला करने वाला सिर्फ अल्लाह है।

कितना प्यारा अंदाज़ था। मगर अफसोस, खारजियों की बड़ी तादाद अपनी जिद्द पर काइम रही। सिर्फ चन्द खारजी ऐसे थे जिन्होने तौबा की। तौफीक तो देने वाला सिर्फ और सिर्फ अल्लाह है।

मोहतरम और प्यारे भाइयों। इन तमाम बातों से मालूम ये हुआ कि अगर कुरआने पाक को ग़लत तरीके से समझ लिया जाए तो बसा-अवकात कितनी ग़लत राह पर वो चला जाता है। कि वो कौम इबादत भी कर रही है, मगर हज़रते अली और सहाबा-ए-किराम को मुश्रिक समझकर खुद दायरा-ए-इस्लाम से खारिज हो रही है। उनकी इबादतें ज़ाया हो रही हैं। ऐसी, कुरआने मजीद फुरकाने हमीद में कई मिसालें हैं कि बज़ाहिर एक आयत का ग़लत मतलब समझ लिया जाए तो दूसरी आयत वो टकराती हुई महसूस होती है। हकीकत ये है, कुरआन की आयतें आपस मे टकराती नही है। अगर मफहूम ग़लत लिया जाए तो ग़लत मफहूम समझने की वजह से ग़लतफहमी का इंसान शिकार हो जाता है। 10:50

कुरआने मजीद फुरकाने हमीद मे इर्शाद फरमाया गया सूरह तौबा आयत नं. 129 → "फरमा दीजिए," मेरे लिए अल्लाह काफी है"। अब अगर कोई इस आयत का ये मतलब ले कि अल्लाह काफी है। अल्लाह के सिवा दूसरे को काफी कहना ये शिर्क है। तो कुरआने मजीद फुरकाने हमीद

पर एतराज़ वाकेअ होता है। सूरतुल अनफाल आयत-64 "ऐ नबी आप के अल्लाह भी काफी है, और आपकी पैरवी करने वाले नेक, सालेह मोमिनीन भी आपके लिए काफी हैं।" सवाल ये है कि जब अल्लाह काफी है, तो किसी और की क्या हाजत? क्या ज़रूरत? इसका जवाब मुफस्सिरीन ने बड़ा प्यारा दिया। फरमाया → जहाँ ये कहा जाएगा कि "अल्लाह काफी है", इस से मुराद है कि हक़ीकी तौर पर सब कुछ देने वाला अल्लाह ही है। और जहाँ ये कहा जाएगा कि मोमिनीन काफी हैं, तो उस से मुराद ये है, कि वो अल्लाह की अता से काफी हैं।

इसी तरह ऐसी और भी मिसालें हैं। मिसाल के तौर पर "अल्लाह तआला से सबकुछ होने का यक़ीन और ग़ैरुल्लाह से कुछ न होने का यक़ीन होना चाहिए"। बसा-अवक़ात ये जुम्ला कहा जाता है। अल्लाह तआला से सबकुछ होने का यक़ीन करो, और अल्लाह के अलावा जो है, ग़ैरुल्लाह है, उन से कुछ न होने का यकीन रखो। यकीनन, बिला शक और शुबा तमाम काम बनाने वाली ज़ात तो अल्लाह ही की है। उसकी मशीअत के बग़ैर ज़र्रा भी हर्कत नहीं कर सकता। लेकिन इस गुफ्तगू से अगर ये कोशिश की जाए दो जहाँ के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम को ~~[illegible]~~ बे-इख्तियार साबित करने की कोशिश हो और ये तसव्वुर देने की कोशिश हो, हुज़ूर न कुछ कर सकते हैं, न कुछ दे

नफ़ाल आयत-८५
ौर आपकी पैरवी
े लिए काफ़ी है।
सी और की क्या
ुफ़स्सिरीन ने
जाएगा कि
क़ीक़ी तौर पर सब
े कहाँ जाएगा
ैं, कि वो अल्लाह

न के तौर पर
और ग़ैरुल्लाह से
-अवक़ात ये जुम्ला
ोने का यक़ीन करो,
अत से कुछ न
और शुबा
की है। उसकी
सकता। लेकिन
ो जहाँ के सरदार
ने-
र ये तसव्वुर
े हैं, न कुछ दे

सकते हैं। अल्लाह की अता से भी नहीं दे सकते। अगर ये नज़रिया हो तो मआज़अल्लाह, क़ुरआन की कई आयतों और अहादीसे तैय्यबा का इन्कार हो जाएगा। १३:२५

एक छोटी सी मिसाल पेश करता हूँ। बुख़ारी, मुस्लिम और दीगर अहादीस की किताबों में तफ़सील से मौजूद है कि मैदाने महशर में लोग, निजात के लिए, अंबिया के पास जाएंगे। अंबिया फ़रमाएंगे → जाओ किसी और के पास और फिर जब वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आएंगे, तो हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अहले महशर की इस मुश्किल में मदद फ़रमाएंगे। और फ़रमाएंगे → मैं ही तुम्हारी शफ़ाअत करूँगा अगर ये अक़ीदा रख लिया जाए कि अल्लाह की दी हुई ताक़त से भी नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ नहीं कर सकते, तो ये तो अहादीस का भी इन्कार है और क़ुरआन की भी कई आयतों का इन्कार है।

ये क़ौम, ख़्वारजी, जिस ग़लतफ़हमी का शिकार हुए वो ग़लतफ़हमी ये थी कि उन्होंने ये तसव्वुर किया कि हज़रते अली और सहाबा मुश्रिक हैं। १५:२८ और हक़ीक़त ये है कि उन्होंने शिर्क को समझा नहीं कि शिर्क किसे कहते हैं।

आइए हम पहले ये समझ लें कि शिर्क किसे कहते हैं? शिर्क की तीन किस्में होती हैं। (1) शिर्क फ़िल इबादत, (2) शिर्क

फ़िज़ ज़ात, (3) शिर्क फिस सिफात

(1) शिर्क फिल इबादत तो ये है कि अल्लाह तआला के अलावा किसी और को इबादत का लायक समझा जाए। जैसे मुश्रिकीने मक्का, कि वो खाना-ए-काबा में 360 बुत, उन्होंने रखे थे और उनकी पूजा करते थे तो अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत की जाए, पूजा की जाए तो ये शिर्क फिल इबादत है।

"ला इलाहा इल्लल्लाह" → अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं।

(2) शिर्क फिज़ ज़ात ये है → ये तसव्वुर किया जाए कि खालिक ए-कायनात, रब्बुल आलमीन की दो ज़ात हैं। तो ऐसा तसव्वुर शिर्क फिज़ ज़ात है। 5:35 अल्हम्दु लिल्लाह, मुसलमान न तो शिर्क फिल इबादत में मुब्तिला है और न ही शिर्क फिज़ ज़ात में मुब्तिला है। न तो वो अल्लाह के अलावा किसी को खुदा समझता है, ईलाह समझता है, माबूद समझता है, न तो वो किसी और की इबादत करता है, पूजा करता है। मुसलमान सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की इबादत करता है। न तो ईसाइयों की तरह, मुसलमान किसी को खुदा समझते हैं, न खुदा का बेटा समझता है।

(3) तीसरी शिर्क की किस्म है शिर्क बिस्सिफात:

शिर्क बिस्सिफात का समझना इन्तिहाई जरूरी है। इसकी तारीफ ये बयान हुई कि जो अल्लाह तआला की सिफात

ला के अलावा
ाए। जैसे
क़ात, उन्होंने रखे
सिवा किसी और
ज़िल इबादत है।
इबादत के लायक
कि
ा जाए, खालिक़
। जो ऐसा
द लिल्लाह,
किला है और
जो वो अल्लाह
ल्लाह समझता
और की
न सिर्फ़ और
ईसाइयों की
न खुदा का बेटा
:
करी है। इसकी
की सिफ़ात

हैं, उन के बराबर किसी और की सिफात तसव्वुर करना
ये शिर्क बिस्सिफात है। इस की मुकम्मल तफसील
अभी अर्ज़ की जाती है। पहले शिर्क की मज़म्मत
आप समाअत कीजिए। सूरह लुकमान आयत न-13
में इर्शाद फरमाया गया → "बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है" 16:55
12:09 A.M
सूरतुन निसा आयत न-48 और 116 में फरमाया गया
तर्जुमा → "बेशक जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा, अल्लाह
तआला उसकी बख्शिश नहीं फरमाएगा और
शिर्क और कुफ्र के अलावा जो और गुनाह होंगे, चाहेगा तो
माफ फरमा देगा।"
सूरह निसा आयत न 48 → "जिसने शिर्क किया, उसने
बड़े गुनाह का तूफान बांधा।"
बिला शुबा मुश्रिक ज़ुल्मे अज़ीम का मुर्तकिब, मग़फिरत और
बख्शिश से महरूम, सरीह गुमराह, हमेशा जहन्नम में
सड़ने वाला, बदबख्त, नामुराद और यकीनन इस्लाम के
दायरे से खारिज है। मुश्रिक की मज़म्मत अपनी जगह है।
लेकिन किसी मुसलमान पर शिर्क का इल्ज़ाम लगाना, किसी
मुसलमान को मुश्रिक कहना, जब कि वो मुश्रिक नहीं
मुसलमान है, शिर्क से पाक है, मुसलमान पर शिर्क का
इल्ज़ाम लगाना इतना बड़ा गुनाह है कि यूँ समझिये कि
शिर्क का इल्ज़ाम लगाने वाला, खुद दायरा-ए-इस्लाम से
बाहर होने के, उसके, इम्कानात हैं।

तफसीरे इब्ने कसीर में हदीसे पाक है। जिसका खुलासा ये है कि नबी-ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया।
"एक शख्स कुरआन पढ़ता होगा, कुरआन का नूर उसके चेहरे पर होगा। इस्लाम पर अमल करनेवाला होगा। मगर वो कुरआन के नूर से भी महरूम होजाएगा और इस्लाम से भी दूर हो जाएगा।" सहाबा-ए-किराम ने पूछा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका वसल्लम ऐसा क्यों होगा? आप ने फरमाया ये अपने पड़ोसी मुसलमान पर शिर्क का इल्ज़ाम लगाएगा। 19:28 सहाबा ए किराम ने पूछा मुश्रिक ~~काफिर~~ कौन होगा? आपने फरमाया ये इल्ज़ाम लगाने वाला खुद दायरा-ए-इस्लाम से खारिज होगा। क्योंकि मुसलमान पर जो शिर्क से बरी है, शिर्क का इल्ज़ाम लगाना, गोया कि अपने-आप को इस्लाम से दूर करना है। तो शिर्क फिज़ज़ात, शिर्क फिल इबादत, इनको समझना तो आसान है, लेकिन शिर्क फिस्सिफात को न समझने की वजह से 20:00 कई लोग दीने इस्लाम से गुमराह हो गए। आज हम शिर्क फिस्सिफात को समझते हैं।

शिर्क फिस्सिफात के माअना फिर अर्ज करता हूँ।
अल्लाह और बन्दे की सिफात में बराबरी का तसव्वुर।
कुरआने मजीद फुरकाने हमीद में है।
"इन्नल्लाहा बिन्नासी ल रऊफुर्रहीम" सूरह बकरह 143
तर्जुमा → बेशक अल्लाह तआला, लोगों पर रऊफो रहीम है

खुलास ये है कि
ने फरमाया
का नूर उसके
वाला होगा।
हो जाएगा और
-किराम ने पूछा
म ऐसा क्यों होगा ?
पर शिर्क का
म ने पूछा मुश्रिक
जाने वाला खुद
मुसलमान पर
, गोया कि अपने -
फ़िल् ज़ात,
सान है, लेकिन
तह से २०:००
आज हम शिर्क

करता हूँ।
का तसव्वुर।

बकरह १५३
रऊफो रहीम है

अल्लाह रऊफ भी है, रहीम भी है।
कुरआने मजीद फुरक़ाने हमीद में दूसरे मुक़ाम पर फरमाया
सूरह तौबा, आयत नं. १२८ → बेशक तुम्हारे पास तुम्ही
में से वो रसूल तशरीफ लाए, जिन पर तुम्हारा
मुशक्कत में पड़ना भारी है, तुम्हारी भलाई को बहुत
चाहने वाले हैं; मोमिनों पर रऊफ और रहीम है। ५:२०
→ एक तरफ फरमाया जा रहा है कि अल्लाह तआला रऊफो
रहीम है। दूसरी तरफ फरमाया जा रहा है रसूले
करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रऊफो रहीम हैं।
तो ज़ेहन में ये सवाल पैदा होगा कि अभी जो आपने
कहा कि शिर्क फिस्सिफात नाम है सिफात में बराबरी
का। ये जो सिफात एक जैसी हो गई। और ये दोनों
कुरआन की आयतें हैं। और कुरआन तो शिर्क से दूर
करता है। दिलों को शिर्क से पाक करता है। मुफस्सिरीन ने
बहुत ही प्यारी बात इर्शाद फरमाई। फरमाया रऊफ
और रहीम अल्लाह भी है, हुज़ूर भी है। लेकिन
बराबरी नहीं है। अल्लाह का रऊफो रहीम होना ज़ाती
है, हुज़ूर का रऊफो रहीम होना अल्लाह की अता
से है। अल्लाह तआला हमेशा से रऊफो रहीम है।
और हुज़ूर रऊफो रहीम हैं जब से अल्लाह ने
उन्हें ये मुक़ामो मर्तबा दिया। जब ये फर्क हो गया
तो बराबरी न रही। अब जब बराबरी न रही तो

शिर्क लाज़िम न आया।

दूसरी मिसाल समाअत कीजिए। सूरह नम्ल की आयत न. 65 में फरमाया : तर्जुमा → तुम फरमा दो, "जो कोई आसमान और ज़मीन मे है, अल्लाह के सिवा कोई ग़ैब नही जानता। एक तरफ ये फरमाया गया कि अल्लाह ही ग़ैब जानता है। दूसरी तरफ फरमाया गया सूरह जिन्न, आयत न. 26 → तर्जुमा → ग़ैब का जानने वाला रब्बुल आलमीन, ग़ैब का इल्म किसी को नही देता, मगर अपने रसूलों को पसंद फरमाता है और उन्हे ग़ैब का इल्म अता फरमाता है। 23:27 दोनो आयते कुरआन की है। इन दोनो आयतों का मतलब मुफस्सिरीन ने ये बयान किया कि हक़ीकी तौर पर ग़ैब का जानने वाला सिर्फ और सिर्फ अल्लाह है। अल्लाह की अता के बग़ैर कोई कुछ नही जानता। और जब अल्लाह तआला अता फरमाए तो मेहबूबे करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की अता से इल्मे ग़ैब जानते हैं। अल्लाह भी ग़ैब के इल्म को जानता है, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ग़ैब के इल्म को जानते है। लेकिन बराबरी नही है। अल्लाह तआला का इल्म ज़ाती है, हुज़ूर का इल्म अल्लाह की अता से है। जब फर्क हो गया तो बराबरी न हुई।

कुरआने मजीद फुरकाने हमीद मे इस की एक और

भी मिसाल दी जा सकती है। सूरह मुहम्मद आयत नम्बर-11 (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

तर्जुमा → मुसलमानों का मौला/मददगार अल्लाह है।

सूरह तहरीम आयत न-04 में फरमाया

तर्जुमा → बेशक अल्लाह उनका मौला है/मददगार है और जिब्राईल मौला/मददगार है, और सालेह मोमिनीन मददगार हैं।

सवाल ये है → एक तरफ कहा जा रहा है कि अल्लाह मददगार है/मौला है। दूसरी तरफ फरमाया जा रहा है कि अल्लाह भी मददगार है, जिब्राइल भी मददगार है और नेक मोमिनीन भी मददगार हैं। 25:18

दोनो आयतें कुरआन की हैं कोई टकराव नहीं। समझना ये है कि अल्लाह तआला मौला है, मददगार है हकीकी तौर पर, जाती तौर पर, और जिब्राइल और सालेह मोमिनीन मददगार हैं अल्लाह की अता से। अल्लाह ने अपनी मदद का उन्हें ज़रीआ और वसीला बनाया।

कुरआने मजीद फुरकाने हमीद की एक और आयते करीमा इस मफहूम को मज़ीद वाज़ेह करती है। सूरतुल माईदा की आयत नम्बर-55। तर्जुमा → "तुम्हारे मददगार है अल्लाह, और उस के रसूल तुम्हारे मददगार हैं और ईमान वाले तुम्हारे मददगार हैं।" 28:08 अल्लाह भी मददगार हुज़ूर भी मददगार हैं, सालेह मोमिनीन भी मददगार हैं।

वही फर्क है → ~~अल्लाह~~ अल्लाह ज़ाती तौर पर मददगार है, हकीकी मददगार है और रसूलुल्लाह की मदद, नेक मोमिनों की मदद अल्लाह की अता से है। और अल्लाह की इनायत से और अल्लाह के करम से है। हकीकी मददगार सिर्फ अल्लाह है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और नेक मोमिनीन अल्लाह की मदद के हासिल करने का ज़रीआ और वसीला हैं।

यहाँ पर एक सवाल और पैदा होता है कि जब ये कह दिया गया कि "अल्लाह तुम्हारा मददगार है" और इसी तरह पिछली आयत में ये कह दिया गया कि "अल्लाह ही उनका मौला है"। तो जब अल्लाह के मददगार होने का जिक्र कर दिया गया तो फिर मोमिनीन, 27:13 रसूलुल्लाह की मदद, जिब्रईल की मदद का ज़िक्र क्यों किया गया ? क्या अल्लाह तआला की मदद काफी नहीं है? हरगिज़ ये बात नहीं। असल बात ये है कि क़ुरआन ये अक़ीदा बयान कर रहा है कि अल्लाह तआला ही मदद फरमाएगा लेकिन अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों के मुक़ाम, मर्तबा व बुलंदी अता फरमाता है और उन से वाबस्ता रहेंगे और उनकी बारगाह में हाज़िर होंगे तो अल्लाह तआला करम फरमाएगा और उन के वसीले से हमारा बेड़ा पार फरमा देगा।

क़ुरआने मजीद फुरक़ाने हमीद की आयात पेश हो

रही हैं। और
आयत से ग़ल
दूसरी आयत
में कोई टकराव
तर्जुमा → "अल्लाह
जिसे चाहे बेटे
आयत न-19, ह
पास आए और
अमीन बोले - त
कासिद हूँ, मैं इ
पाकीज़ा बेटा
एक तरफ फ
ही देता है। दूसरी
"मैं तुझे नेक साले
अता करने वाला
अता कर रहे हैं
कर रहे हैं।
सुबह ज़ु
गया → "अल्लाह
करता है" जिं
सूरतुस सजदा
"ऐ महबूब आप

पर मददगार हैं,
ो मदद, नेक मोमिनों
र अल्लाह की
हैं। हकीकी मददगार
ल्लाह अलैहि
ी मदद के
हैं।
है कि जब ये
ददगार हैं" और
या गया कि
अल्लाह के
ो फिर मोमिनीन
27:13
ा ज़िक्र क्यों
मदद काफी नहीं है?
के कुरआन ये
ाला ही मदद
न्दों के मुक़ाम,
उन से वाबस्ता
ंगे तो अल्लाह
सीले से हमारा
आयात पेश हो

रही हैं। और इन आयात का मकसद क्या है कि एक आयत से गलत मफ्हूम ले लिया जाए तो कुरआन की दूसरी आयत उससे टकरा जाएगी। हालांकि कुरआन में कोई टकराव नहीं है। सूरह शूरा आयत न-49 तर्जुमा → "अल्लाह जिसे चाहे बेटियाँ अता फरमाए और जिसे चाहे बेटे दे।" और दूसरे मुक़ाम पर सूरह मरियम आयत न-19, हज़रते जिब्राइले अमीन हज़रते मरियम के पास आए और जिब्राइले अमीन ने क्या कहा? जिब्राइले अमीन बोले - तर्जुमा → "मैं तो सिर्फ तेरे रब का भेजा हुआ कासिद हूँ, मैं इसलिए आया हूँ कि तुझे सुथरा और पाकीज़ा बेटा अता करूँ।

एक तरफ फरमाया गया कि बेटे और बेटियाँ अल्लाह ही देता है। दूसरी तरफ जिब्राइले अमीन कह रहे हैं कि "मैं तुझे नेक सालेह बेटा अता करूँ।" हक़ीकी तौर पर अता करने वाला अल्लाह ही है, जिब्राइले अमीन जो अता कर रहे हैं अल्लाह की अता से, बिइज़्निल्लाह कर रहे हैं।

सूरह ज़ुमर आयत न-42 में इर्शाद फरमाया गया → "अल्लाह ही जानों को मौत देता है, रूह कब्ज़ करता है।" जिंदगी-मौत देने वाला अल्लाह ही है। सूरतुस सजदा आयत न-11 में फरमाया गया "ऐ महबूब आप फरमाइए। मौत के फरिश्ते, हज़रते

मलिकुल-मौत तुम्हे मौत देंगे।" सवाल ये है कि हज़रते इज़राईल अलैहिस्सलाम मौत दे रहे हैं, कुरआन बयान कर रहा है 30:15 कि मौत वो देंगे और एक तरफ ये कि मौत देने वाला अल्लाह तआला है। दोनो आयतो मे कोई टकराव नही। समझना ये है कि हक़ीकी तौर पर मौत देने वाला अल्लाह ही है। हज़रते मलकुल मौत अलैहिस्सलाम अल्लाह की आज्ञा से बिइज़्निल्लाह, आप ये काम करते है। मजीद कुरआन की इस आयत से बिइज़्निल्लाह का मफहूम समझ मे आ जाता है। बाताइए बिमारो को शिफा देने वाला कौन? अल्लाह! मुर्दों को जिन्दा कौन करता है? अल्लाह करता है। लेकिन हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम एलान फरमा रहे हैं सूरह आले-इमरान आयत नंबर-49 [तर्जुमा→ "मै बिमारों को शिफा देता हूँ। मादरज़ात अंधो को आँखे देता हूँ। बर्स के मरीज़ो को शिफा देता हूँ। और मै मुर्दों को जिन्दा करता हूँ।"] लेकिन आप खुद वज़ाहत कर रहे हैं → बिइज़्निल्लाह करता मै हूँ लेकिन ये अल्लाह की आज्ञा से करता हूँ। 3:30 अल्लाह के इज़्न से करता हूँ। तो जब आताई और जाती का फर्क हो गया तो बराबरी न हुई और बराबरी न हुई तो शिर्क न हुआ।

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम के दौर मे मुनाफिक़ीन थे। मुनाफिक़ीन भी इन चीज़ों को

न समझ सके
फर्क को न समझ
सल्लल्लाहु, अ
लगा दिया। मु
फ़खरुद्दीन रा
है, आलमे इस्
आप लिखते है
मे ये हवाला म
तफसीर है जो
मे मारूफ है। [
तर्जुमा → [नबी-
इर्शाद फरमाया
से मुहब्बत की
की फरमाबरदारी
के मुताल्लिक कह
ज़ालिक) शिर्क
करते हैं कि अ
और चाहते ये
ईसाइयों ने हज़
तसव्वुर कर
नाज़िल किया
"जो रसूलुल्लाह

न समझ सके और उन्होंने इतनी बड़ी जसारत की कि इस
फर्क को न समझने की वजह से उन्होंने नबी-ए-करीम
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर शिर्क का इल्ज़ाम
लगा दिया। मुफस्सिरे शहीद हज़रते अल्लामा —
फ़ख़रुद्दीन राज़ी अलैहिर्रहमा, जिनका सने विसाल 606 हि.
है, आलमे इस्लाम की मशहूर-तरीन तफसीर-ए-कबीर मे,
आप लिखते हैं - जिल्द-4, सफ़हा न.-150, बैरूत के नुस्खे
में ये हवाला मौजूद है और ये आलमे इस्लाम की वो
तफसीर है जो 800 साल से तमाम मुसलमान, उलमा
में मारूफ है। [3:40 - 3:49] - हदीस मतन
तर्जुमा → [नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने
इर्शाद फरमाया "जिसने मुझ से मुहब्बत की, उसने अल्लाह
से मुहब्बत की, जिसने मेरी फरमाबरदारी की उसने अल्लाह
की फरमाबरदारी की।" तो मुनाफिक़ बोले, "ये मर्द (हुजूर
के मुतालिक कह रहे हैं) कि ये नबी (नाऊजोबिल्लाहि मिन
ज़ालिक) शिर्क ~~कर रहे हैं~~ के करीब हो गए हैं। हमें तो मना
करते हैं कि अल्लाह के सिवा किसी की पूजा मत करो
और चाहते ये हैं कि हम इन्हें खुदा मान लें, जैसा कि
ईसाइयों ने हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा
तसव्वुर कर लिया], तो अल्लाह ने इस आयत को
नाज़िल किया सूरह निसा आयत न- 80 कि
"जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

इताअत करे, उस दर-हक़ीक़त अल्लाह की इताअत की।"
यहाँ पर एक चीज़ तवज्जो के लायक है। वो ये कि हुज़ूर ने फरमाया "मेरी मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत है।"
"मेरी इताअत अल्लाह की इताअत।" तो मुनाफ़िक़ीन ने हुज़ूर पर शिर्क का इल्ज़ाम इस वजह से लगाया कि वो यह कहने लगे कि "हुज़ूर ने अपनी ज़ात को अल्लाह से मिला दिया। ↓ continue

अल्लाह अल्लाह है और ये (हमारे नबी) अल्लाह के बन्दे हैं। ये कैसे हो सकता है इनकी मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत बन जाए? इन की इताअत अल्लाह की इताअत बन जाए।"

कुरआन ने इन मुनाफ़िक़ीन का रद्द किया और फरमाया मेहबूब की जो इताअत करता है, जो हुज़ूर से मुहब्बत करता है वो दर-हक़ीक़त अल्लाह से मुहब्बत कर रहा है। हुज़ूर की इताअत दर-हक़ीक़त अल्लाह की इताअत है। [जिसने रसूलुल्लाह की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की। (QURAN) AYAT:-]

यही तफसीर, यही वाक़िआ अज़ीमुश्शान तफसीर तफसीरे ख़ाज़िन, पहली जिल्द सफ़ह न. 405 पर मौजूद है। और भी कई मुफस्सिरीन ने इस वाक़िआ को ज़िक्र किया।

यहाँ पर ये अर्ज़ करूँ कि अल्लाह तबारक व तआला अपने नेक बन्दों को मुक़ाम व मर्तबे की बुलंदी देता है। और इन

नेक बन्दों को ताकत व क़ुदरत देता है। इसका ये मतलब है
"बेशक अल्लाह तआला हर चाहत पर क़ादिर है।" QURAN
वो जिसे जो मुक़ाम व मर्तबा देना चाहे, वो दे सकता है।
अल्लाह की क़ुदरत को महदूद [LIMITED] न समझा जाए।
रब्बुल आलमीन ने हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम
को कैसी हुकूमत दी। जिन्नात आप के ताबेअ (अधीन),
हवाएं आप के ताबेअ, परिंदों की बोलियाँ आप सुनते
और समन्दर में मौजूद मछलियों से आप गुफ़्तगू करते।
ये जो आपको मुक़ाम व मर्तबा दिया गया, पूरी दुनिया की 36:21
हुकूमत दी गई, आप हवाओं में उड़ते, हवा आप के ताबेअ
थी। ये मुक़ाम व मर्तबा किसने दिया? अल्लाह ने। तो
अल्लाह अपने नेक बन्दों को जो भी मर्तबा दे बन्दे को
चाहिए कि वो अल्लाह की क़ुदरत पर यक़ीन रखे और
वो ये कहे कि अल्लाह तआला जो चाहे कर सकता है।
बुखारी शरीफ, दूसरी जिल्द, सफह न - 963
किताबुर्रिक़ाक़ . किताबुत तवाज़ोअ हदीस न - 602]
"अन अबि हुरैरत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, क़ाला क़ाला
रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम,"
तर्जुमा → हज़रते अबू हुरैरा से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम ने फरमाया
'इन्नल्लाहा क़ाला मन आदा ली वलीयन फक़द
आज़नतुहू बिल हर्बी' (~~[illegible]~~) ये हदीसे क़ुदसी है।

"हुज़ूर फरमाते हैं बेशक अल्लाह तआला फरमाता है -"जो मेरे वली से दुश्मनी रखेगा, जो मेरे मेहबूब बन्दे से दुश्मनी रखेगा उसके लिए मेरा ऐलाने जंग है।" मेहबूब बन्दे से दुश्मनी के क्या माअना हैं? इसके माअना हैं मेहबूब बन्दे के मुक़ाम व मर्तबे को घटाने की कोशिश करना, अल्लाह ने उन्हें जो मुक़ाम दिया उसे तस्लीम न करना, उनकी इज़्ज़तो-ताज़ीम और तौक़ीर मुसलमानों के दिलों से निकालने की कोशिश करना, ये दुश्मनी है। और फरमाया -"जो अल्लाह के वली से मेहबूब बन्दे से दुश्मनी रखता है, अल्लाह तआला उससे ऐलाने जंग फरमाता है। इसके तहत मोहद्दिसीन ने ये फरमाया कि अल्लाह तआला उसे मरते वक़्त ईमान से मेहरूम फरमा देता है। जो अल्लाह के वली से दुश्मनी रखे, उनके मुक़ाम व मर्तबे को घटाने की कोशिश करे।

"मेरा बन्दा कुर्ब हासिल करता रहता है यहाँ तक कि वो फराइज़ के ज़रीए मेरी बारगाह में 38:45 कुर्ब हासिल करता है, और मेरा बन्दा नवाफिल के जरीए (फराईज़ के बाद) मेरा कुर्ब हासिल करता है, यहां तक कि मैं उसे अपना मेहबूब बना लेता हूं। जब मेहबूबियत मिल जाती है, तो जब मैं उसे अपना मेहबूब बना लेता हूँ, तो मैं उसके कान बन जाता हूं जिससे वो सुनता है। मैं उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वो देखता है। और मैं उसके हाथ बन जाता हूं जिससे वो पकड़ता है। और मैं उसके

पाँव बन जाता हूँ जिससे वो चलता है। और अगर मेरा ये मकबूल बन्दा मुझसे कोई चीज़ मांगे, कोई सवाल करे, दुआ मांगे, ज़रूर ब-ज़रूर उसकी दुआओं को कबूल फरमाता हूँ।"

मुफस्सिरे कबीर अल्लामा इमाम फखरूद्दीन राज़ी अलैहिर्रहमा, जिन का अभी ज़िक्र किया गया कि आप का सने विसाल 606 हिजरी है, तफसीरे कबीर, सातवीं जिल्द सफह न. 436 सूरह कहफ़ की आयते करीमा है- "अम हसिबता अन्ना अस्हाबल कहफ़" इसके तहत मुफस्सिरे शहीद, मुफस्सिरे कबीर, इस हदीसे कुदसी की शरह फरमाते हैं- "जब अल्लाह का नेक बन्दा, मुसलसल इबादतें करता रहता है, और अल्लाह का मकबूल बन जाता है, फिर वो इस मुकाम पर पहुँच जाता है कि अल्लाह तआला फरमाता है मैं उसके कान बन जाता हूँ, मैं उसकी आँखें बन जाता हूँ। हज़रते इमाम जलाल उद्दीन सूफी अशरफ़ई अलैहिर्रहमा और दिगर बुज़ुर्गों ने भी इसकी तशरीह में ये, ऐसी बातें लिखी हैं। लेकिन इमाम फखरूद्दीन राज़ी अलैहिर्रहमा ने बड़े वाजेह तौर पर इर्शाद फरमाया 'जब अल्लाह के जलाल का नूर उसके कान बन जाता है, वो महबूब बन्दा करीब की बातें भी सुन लेता है, और दूर की बातें भी सुन लेता है। और जब अल्लाह के जलाल का नूर उसकी आँखें बन जाता है, तो वो बन्दा

DATE
PAGE 63

करीब को भी देख लेता है और दूर को भी देख लेता है। और जब अल्लाह के जलाल का नूर उसके हाथ बन जाता है तो अल्लाह तआला उसे वो ताकत देता है कि करीब और दूर, आसान व मुश्किल, तमाम कामों पर कुदरत रखता है और वो, वो करामातें दिखाता है कि अक्लें दंग रह जाती हैं।

मोहतरम व प्यारे भाइयों! अल्लाह के नेक बन्दे जो ताकत रखते हैं, हदीसे कुदसी और तफसीरे कबीर के हवाले से आप ने अच्छी तरह समझ लिया। कुरआने मजीद फुरकाने हमीद ने भी अल्लाह के नेक बन्दों की ताकत का ज़िक्र है। ~~[illegible]~~ मलिका-ए-बिल्कीस, मुल्के सबा की मलिका। उसका वो तख़्त, 80 गज लंबा, 50 गज चौड़ा सोने-चाँदी और हीरे जवाहिरात से सजा हुआ, दो महीने की मसाफत पर था। दो महीने तक घोड़ा दौड़ता रहे, तब जाकर इसके फासले को तय करे। सख्त पहरे में, सात कमरों के 7 तालों में बन्द था। इसपर पहरेदार मुकर्रर किए गए। हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम ने अपने दरबारियों से फरमाया कि मलिका-ए-बिल्कीस मेरे पास आ रही हैं। उसके आने से पहले, तुम में से कोई है, जो मलिका-ए-बिल्कीस के तख्त को मेरे पास ले आए? कुरआने मजीद फुरकाने हमीद बयान फरमाता है कि एक ताकतवर जिन्न ने कहा, कि 'मैं लेकर आऊंगा'। हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फरमाया-कब लेकर आओगे? 53:30 कहने लगा

अभी सुबह है, शाम होने से पहले पहले ले आऊंगा। आप ने फरमाया ये तो ताख़ीर हो जाएगी। मुझे तो इस से भी पहले चाहिए। सूरह नम्ल आयत न-४० में फरमाया गया; हज़रते आसफ बिन बर्खिया का जिक्र किया जो वली-ए-कामिल थे। सुलैमान अलैहिस्सलाम के उम्मती थे। 'कहा उस वली ने जिसके पास ज़बूर का इल्म था, अल्लाह की किताब का इल्म था।, मैं इस तख़्त को लेकर आऊंगा। हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम ने उनसे फरमाया, आप कब लेकर आएंगे तो आप (आसफ बिन बर्खिया) फरमाने लगे, 'आपकी पलक झपकने से पहले लेकर आ सकता हूँ। तो आप (सुलैमान अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ले आओ। हज़रते आसफ बिन बर्खिया ने फौरन ही तख़्त सामने मौजूद कर दिया।

अब देखें। हज़रते आसिफ बिन बर्खिया, जो तख़्त लेकर आए, आप अल्लाह के वली हैं। ज़बूर के आलिम हैं। हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम के उम्मती हैं। अल्लाह ने आपको ये ताकत दी कि आपने रूहानी कुव्वतों से ये काम, जो मुश्किल है, आपके लिए आसान था। ५५:०२ हज़रते सुलैमान अलैहिस्सलाम की उम्मत में जो वली है, उसकी ताकत का ये आलम है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वआलेहि वसल्लम की उम्मत के औलिया, अंबिया

~५

की ताक़तें और फिर अंबिया के जो सरदार हैं, सय्यदे कौनेन सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम, उनकी ताक़त का क्या आलम होगा ? सहाबा-ए-किराम अलैहिमुर्रिद्वान का यही अक़ीदा था और सहाबा-ए-किराम मुश्किल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम से मदद मांगा करते थे। हुज़ूर को वसीला समझते और सहाबा-ए-किराम का अक़ीदा यही था कि हक़ीक़ी मददगार सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला है। हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम अल्लाह की दी हुई ताकत से मदद फरमाते हैं।

हज़रते सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफत में, नबुव्वत का झूठा दावा करने वाले मुसैलमा कज़्ज़ाब ने सर उठाया। उस बदबख़्त कज़्ज़ाब के साथ साठ हजार फौजी थे। ५६:०८ इस जंगे यमामा में मुसलमानों की तादाद बहुत कम थी। एक मोड़ वो आया कि मुसलमान सख्त मुश्किल में मुब्तिला हुए। इस परेशानी में मुसलमानों के सिपहसालार जलीलुल क़द्र सहाबी-ए रसूल हज़रते ख़ालिद बिन वलीद रद्दियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मदद के लिए पुकारा। इब्ने कसीर, जिन्हें दुनिया मोहक्किक तस्लीम करती है, "अल-बिदाया वन-निहाया" जिल्द-६ सफह न-२४, वो लिखते हैं -

"क़ाना शिआरोहुम यवमइज़िन या मुहम्मदा"

, सय्यदे कौनैन
की ताक़त का क्या
ईदवान का यही अक़ीदा
र सल्लल्लाहु
रते थे। हुज़ूर को
अक़ीदा यही था
ह तआला है।
मालेहि व सल्लम
।
ज़ियल्लाहु अन्हु
करने वाले
तरत कज़्ज़ाब के
यमामा में
आया कि
। इस परेशानी
ई सहाबी-ए
हु अन्हु ने
सल्लम को
इनिया
-निदाया"
गजित या

उसवक़्त इन, सहाबा-ए-किराम, का शिआर ये था कि वो हुज़ूर को मदद के लिए पुकार रहे थे।

आप मुझे बताइए, सोचें, सहाबा-ए-किराम से बढ़कर तौहीद को समझने वाला और कौन हो सकता है? अगर किसी को मदद के लिए पुकारना शिर्क होता, तो सहाबा-ए-किराम हर्गिज़ न पुकारते। हाँ इतना अर्ज कर दूँ कि जब हम किसी से मदद माँगते हैं तब ये अक़ीदा होना ज़रूरी है, उन्हें जो ताक़तें हैं वो अल्लाह की अता से हैं। और वो बि-इज़्निल्लाह, अल्लाह की दी हुई ताक़त से, अल्लाह के इज़्न से, अल्लाह के हुक्म से, अल्लाह की दी हुई इजाज़त से वो मदद करते हैं। सहाबा-ए-किराम का ये अमल है ५५:५० और नबी-ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें सहाबा-ए-किराम के नक्श-ए-कदम पर चलने का हुक्म दिया।

तिर्मिज़ी शरीफ किताबुल ईमान में है, आक़ा ए दोजहां सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया "इन्ना बनी इस्राइला तफर्रका..." तर्जुमा -> बनी इस्राईल ७२ फिरकों में तकसीम हो गई और मेरी उम्मत मे ७३ फिरके होंगे, तमाम फिरके जहन्नम मे जाएंगे, मगर एक ही फिरका जन्नती होगा। सहाबा ने अर्ज किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व सल्लम, हमें बताइये कि वो जन्नती फिरका कौनसा होगा? आपने फरमाया, वो मेरे और मेरे

सहाबा के नक्शा-ए-कदम पर होंगे।" 48:47 तो सहाबा-ए-किराम तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताक़त, हुज़ूर के कमालात, हुज़ूर के इख्तियार और अल्लाह तआला ने जो आपको मुक़ाम व मर्तबा दिया है, सहाबा तस्लीम करते थे। तो जो सहाबा-ए-किराम के नक्शे क़दम पर चलना चाहता हो, उसे चाहिए वो भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़ाम व मर्तबे को माने।

सहाबा-ए-किराम के बाद, 49:10 सहाबा-ए-किराम से फैज़ पाने वाले हमारे पेशवा सरदार सय्यदना इमामुल आज़म इमाम अबू हनीफ रदियल्लाहु तआला अन्हु हैं। आप वो अल्लाह के नेक बन्दे हैं कि सहाबा-ए-किराम से फैज़ हासिल किया। आप ताबई हैं। आप हुज़ूर की बारगाह में अर्ज़ करते हैं।

या मालिकी कुन शाफेई फी फा-क़ती
इन्नी फक़ीरुन फिर्रा लि-ग़िनाका।

तर्जुमा → ऐ मेरे मालिक आका-ए-दोजहाँ सल्लल्लाहु अलैका वसल्लम क, आप मेरी हाजतों को पूरा कर दें। मैं तमाम मख़लूक में आपकी अता को हासिल करने वाला फक़ीरो-मोहताज हूँ। 50:00

या अकरमस्सक़लैन या कंजलवरा जुद-ली बि-जूदीका
वद्दिनी बिरिदाका।

तर्जुमा → ऐ जिन्न और इंसानों में सबसे ज़्यादा करीम

इज़्ज़त वाले । ऐ मख़्लूक में ख़ज़ाने तकसीम करने वाले । मुझ पर एहसान फरमाइए (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अपनी रिज़ा से मुझे राज़ी फरमा दीजिए । अपनी अता से मुझे मालामाल फरमा दीजिए" मैं आपकी अताओं का उम्मीदवार हूँ। आप से सवाली हूँ। आपके सिवा मख़्लूक में अबू-हनीफा का कोई भी नहीं है।

बताइए ! इमाम-ए आज़म अबू हनीफ से बढ़कर कुरआन समझने वाला हम में से कोई हो सकता है ? आप ताबई हैं। अल्लाह के नेक बन्दे हैं। हुज़ूर की बारगाह में फरियाद कर रहे हैं। हुज़ूर के विसाले ज़ाहिरी के कई सालों के बाद हुज़ूर की बारगाह में तमन्नाएं करते हैं, उनसे मदद का सवाल कर रहे हैं। अक़ीदा यही है कि जो देगा अल्लाह ही देगा । हुज़ूर अल्लाह की अता से और अल्लाह तआला के करम से और बि-इज़्निल्लाह अता फरमाएंगे।

स्वालेहीन से फ़ैज़ हासिल करने वाले साहिबे दलाइल उल ख़ैरात हैं जो बड़ी अज़मतों वाले हैं। बड़ा आपका मुक़ाम है। आपने दलाइल-उल-ख़ैरात शरीफ लिखी । सदियों पहले ये किताब लिखी गई दुरूदे पाक की। आप इसमें बड़ी अक़ीदतो मुहब्बत के साथ दुरूदो सलाम लिखते हैं। 51:46 आपका इस्मे गिरामी

हज़रते मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ौली अलैहिर्रहमा है। आपका सबे विसाल 16 रब्बिउल अव्वल 870 हिजरी है। दलाइल उल खैरात शरीफ बड़ी मशहूरो मारूफ किताब है। और उलमा ने इसे मुजर्रब अमल करार दिया। आप जो दुरूदे पाक लिखते हैं, दलाइल उल खैरात शरीफ में, उसकी चंद मिसालें देखें और देखें, समझें कि बुज़ुर्गाने दीन ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़ाम व मर्तबे को कैसा समझा। आप लिखते हैं। तर्जुमे:२

① ऐ अल्लाह उस ज़ाते मुक़द्दस पर रेहमत नाज़िल फरमा जो सख़ावत करने वाले हैं, करम करने वाले हैं। हमारे

② आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो मुश्किलात को हल फरमाने वाले हैं। ऐ अल्लाह दुरूद भेज उस ज़ात पर जो ग़म के दूर करने वाले हैं।

इससे सहाबा-ए-किराम, बुज़ुर्गाने दीन और औलिया-ए-किराम के अक़ीदे की वज़ाहत होगई। सहाबा का ज़िक्र भी हुआ। हज़रते इमामे आज़म का भी ज़िक्र हुआ। 53:19 और हज़रते मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ौली अलैहिर्रहमा का भी ज़िक्रे खैर किया गया। ऐसे कई बुज़ुर्गाने दीन हैं, जिनका ये मामूल रहा और जिन्होंने क़ुरआने मजीद फुरक़ाने हमीद समझने के साथ-साथ मुसलमानों को ये सोच अता फरमाई कि हक़ीक़ी देने वाला तो अल्लाह ही है लेकिन अल्लाह वालों से लो

लगाना, उनकी बारगाह में हाज़िर होना, ये बाइसे सआदत है। लेकिन ये बात याद रखें कि जब हम अल्लाह वाले के पास हाज़िर हों या अल्लाह वाले को यहाँ से अर्ज़ करें कि "आप हमारा ये काम कर दें, आप हमारी मदद फरमाएँ" तो इसके माअना यही होते हैं कि अल्लाह की मदद हासिल होने का ये ज़रीआ है, वसीला है। हक़ीक़त में तो अल्लाह ही मदद फरमाएगा, अल्लाह ने इन्हें वसीला और ज़रीआ बनाया है। दुनिया के अंदर हम दुनियादारों को, कई मौकों पर मदद हासिल करने का ज़रीआ समझते हैं। रोज़ी देने वाला अल्लाह ही है। अता करने वाला अल्लाह ही है। लेकिन कोई अगर हमारी मदद कर देता है तो हम कहते हैं कि फलां ने हमारी मदद की। अक़ीदा यही है कि हक़ीकी मददगार अल्लाह ही है, अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ को ज़रीआ और वसीला बनाया। जब आम मख़्लूक़ ज़रीआ और वसीला बन सकती है, तो फरिश्तों, नबियों और वलियों की तो वो शान है जिसको हम अल्फ़ाज़ में बयान नहीं कर सकते।

जब शैतान ये देखता है कि मेरी कोशिश बेकार चली गई। मुसलमान अल्लाह तआला की कुदरत और ताक़त को मेहदूद मानने को तैय्यार नहीं। मुसलमान ये मानता है कि अल्लाह जिसको चाहे मुक़ाम व मर्तबा दे। इस मौके पर शैतान की गुस्ताखी खुलकर सामने आ जाती है

और असली दुश्मन झूठ का सहारा लेते हुए कहता है,
["ऐ मुसलमानों! तुम अल्लाह वालों से मुहब्बत करते हो। मदद के लिए उन्हें पुकारते हो ताकि अल्लाह तआला का कुर्ब तुम्हे मिल जाए और अल्लाह तआला से क़रीब होजाओ ये अक़ीदा तो मुश्रिकीन का था। वो भी बुतों को पूजते थे ताकि ये बुत इन्हें अल्लाह के क़रीब कर दें। तुम में और मुश्रिकों में क्या फर्क़ है ?] और कुरआने मजीद की इस आयत को पेश किया जाता है। 23वे पारे में है।

"मा नाअबुदुहुम इल्ला लि युकर्रिबूना इलल्लाहि ज़ुल्फा"

तर्जुमा → वो कहते हैं हम तो इन बुतों को सिर्फ इसलिए पूजते हैं कि ये हमें अल्लाह के नज़दीक कर दें।

देखें! कितना बड़ा झूठ है। मुश्रिकीन पूजा कर रहे हैं। कोई मुसलमान अल्लाह के सिवा और किसी की पूजा या इबादत तो करता नहीं। बात उन मुश्रिकों की हो रही है जो गैरुल्लाह को पूजते हैं। वली हों, अंबिया हों, मुसलमान किसी को पूजता नहीं, किसी की इबादत नहीं करता। वो सिर्फ और सिर्फ अल्लाह ही की इबादत करते हैं। कितना बड़ा फर्क़ है। दूसरी बात ये एक तो वो शिर्क कर रहे हैं, बुतों को पूज रहे हैं। अल्लाह की नाफरमानी कर रहे हैं और समझ रहे हैं कि हम अल्लाह के नज़दीक हो जाएंगे। जो अल्लाह की नाफरमानी करे वो अल्लाह के नज़दीक तो नहीं हो सकता। और ये बुत, जिनका कोई मुक़ाम नहीं, जिनसे दूर रहने का हमें

...हुए कहता है,
...हब्बत करते हो।
...लाह तआला का
...ा से क़रीब होजाओ
...ों को पूजते थे
...। तुम में और
... मजीद की इस
...में है।
...लाहि ज़ुल्फा"
...कि ये हमें अल्लाह

...रहे हैं। कोई
...पूजा या इबादत
...ी है जो गैरुल्लाह
...त किसी को पूजता
... और सिर्फ
...ड़ा फर्क़ है।
..., बुतों को पूज रहे
...र समझ रहे हैं
...ो अल्लाह की
... नहीं हो सकता।
... दूर रहने का हमें

हुक्म दिया गया, ये पत्थर के बेजान बुत, अल्लाह के क़रीब करने की सलाहियत और ताक़त रखते ही नहीं हैं। अल्लाह ने इन बुतों को कोई मुक़ाम व मर्तबा नहीं दिया।

इतना फर्क़ है इसके बावजूद इस आयत को मुसलमानों पर चस्पा करना, ये कितना बड़ा जुल्म है और कितनी बड़ी गलती है। मोमिनीन और मुश्रिकीन, बुतों और सालेहीन में कोई बराबरी नहीं है। कुरआने मजीद का मुताअला कीजिए। बुतों से दूर रहने का हुक्म दिया गया और अंबिया और सालेहीन के दामन से वाबस्ता रहने का हुक्म दिया गया। बुतों को तोड़ने का हुक्म है, लेकिन अंबिया और सालेहीन से हमेशा जुड़े रहने का हुक्म है। बुतों की मुहब्बत अल्लाह तआला से दूर कर देती है, अंबिया और सालेहीन की मुहब्बत, अल्लाह से क़रीब कर देती है। बुत न गमख्वार हैं न मददगार हैं, अंबिया और सालेहीन अल्लाह की दी हुई ताक़तों से बिइज़्निल्लाह मददगार और गमख्वार हैं।

जब इतना फर्क़ है तो बुत और सालेहीन बराबर नहीं हो सकते। कुर्बान जाइए कुरआन पर। इसने तो पहले ही फरमा दिया → "योदिल्लो बेही कसीरा" → कई लोग कुरआन पढ़ने के बावजूद गुमराह हो जाते हैं, कुरआन को गलत समझने की वजह से। हज़रते उमर बिन ख़त्ताब फरमाते हैं → हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने इर्शाद फरमाया, "अल्लाह तआला इस कुरआन के ज़रीए बाज़ लोगों को बुलंदी अता फरमाएगा और इस कुरआन के ज़रीए बाज़ लोगों को तबाह व बर्बाद फरमाएगा"।

बुलंदी उन्हे ही मिलेगी जो नूरे कुरआन से मुनव्वर होंगे। और नूरे कुरआन से मुनव्वर होने के लिए साहिबे कुरआन यानि आका-ए दो-जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत ज़रूरी है।

और तबाह व बर्बाद और जलील और रुसवा वो लोग होंगे जो कुरआन को गलत तरीके से समझकर मुसलमानों पर शिर्क के इल्ज़ाम लगाकर खुद ही दायरा-ए इस्लाम से दूर होते है। जो लोग बुतों वाली आयते मुसलमानों पर फिट करते हैं।

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस खवारजी गिरोह ~~के बारे में फरमाया कि ये मख्लूक में बदतरीन लोग होंगे~~ को "शिरारुल खल्क" फरमाया कि ये मख्लूक में बदतरीन लोग होंगे, इबने माजा मे ये अल्फाज़ मौजूद हैं, इस गिरोह के मुताल्लिक हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा का कौल इमाम बुखारी अलैहिरहमा ने जिल्द-२ सफह नम्बर १०२४ आपने ज़िक्र किया। ये ख्वारजियो की अलामत बयान करते हैं। "ये खवारजी इतने गुमराह लोग हैं कि जो आयतें काफिरों के बारे में नाज़िल हुई हैं उन्हें मुसलमानों पर

चस्पा करते हैं। जो बुतों के लिए आईं, वो मुसलमानों
और औलिया पर फिट करते हैं।"

ऐसे लोग यकीनन दीन से भी दूर हैं और ऐसे लोगों का
कुर्ब ईमान को कुरआन से दूर कर देता है। आप सोचें,
जिस आका ए दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हम
मानते हैं वो हदीसे पाक (उनकी), जो आपने, अपने विसाले
जाहिरी से तीन दिन पहले आपने इर्शाद फरमाया। बुखारी
शरीफ, जिल्द-२ सफहा न-975, किताबुर्रिकाक
हदीस न-6402 आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
इर्शाद फरमाते हैं:-

"खुदा की कसम! मुझे इस बात का कोई खौफ़ नहीं, कि तुम
मेरे बाद शिर्क करोगे।" यानि हुज़ूर फरमाते हैं कि
मुझे इस बात का कोई खौफ़ नहीं कि मेरी उम्मत शिर्क में
मुब्तिला हो जाएगी। हाँ ये फरमाते हैं कि "हाँ मुझे इस
बात का डर ज़रूर है कि तुम दुनिया में फंस जाओगे, दुनिया
की मुहब्बत में गिरफ्तार हो जाओगे।"

आज बताइए कौन है जो दुनिया की मुहब्बत में डूबा हुआ
न हो (मगर जिसे अल्लाह बचाए)। लेकिन हुज़ूर ने
फरमा दिया कि मेरी उम्मत शिर्क नहीं करेगी। हुज़ूर के
मानने वाले, हुज़ूर से मुहब्बत करने वाले, हुज़ूर का कलिमा
पढ़ने वाले, कितने भी दीन से दूर हों, मगर जब उनसे
पूछा जाए कि बताओ हकीकी तौर पर मालिक कौन है?

हकीकी तौर पर नेअमतें देने वाला कौन है ? हकीकी तौर पर ख़ालिक और मालिक कौन है ? तो वो यही कहेंगे की 'अल्लाह है और अल्लाह तआला के नेक बन्दे, अंबिया और सालेहीन जो ताकतें रखते हैं, जो मोजिज़ात और करामात का इज़हार होता है जो उनकी कुदरत का इज़हार होता है वो कैसे है ? तो मुसलमान यही कहेगा कि बि-इज़्निल्लाह है, अल्लाह की दी हुई ताक़तों से है। कोई किसी को अल्लाह के सिवा, न रब मानता है, न खुदा मानता है, न इलाह मानता है, न माअबूद मानता है।

सवाल ये पैदा होता है कि क्या नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के बन्दों से मदद माँगने की इजाज़त दी ? उसका जवाब ये है - जी हाँ। सहीह आहदीस में मौजूद है।

"हज़रते उत्बा बिन ग़ज़वान से मर्वी है। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया "जब तुम में से किसी की कोई चीज़ गुम हो जाए या वो मदद हासिल करना चाहे और वो ऐसी ज़मीन में हो जहां इसका कोई मददगार न हो, कोई इंसान न हो तो उसे चाहिए कि वो कहे - [ए अल्लाह के बन्दों, मेरी मदद करो।] बेशक अल्लाह के ऐसे मक़बूल बन्दे हैं, जो नजर नहीं आते और मदद करते हैं।"

मोहद्दीस फरमाते हैं कि ये एक ऐसा अमल है कि इसपर

अमल किया गया और इसके फायदे फौरन ज़ाहिर हुए। इस हदीसे पाक से बिल्कुल वाज़ेह हुआ कि अल्लाह के बन्दों से मदद माँगने की नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तरग़ीब दी है।

इन तमाम अहादीस, कुरआन की आयतों के बाद आख़िर में अजिज़ाना दर्खास्त ये है - मोहतरम भाईयों। कुरआने पाक में इर्शाद है सूरह फातिर आयत न-6

तर्जुमा - बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम भी उसे दुश्मन समझो।

शैतान की आरज़ू व तमन्ना यही है कि वो हमें तबाह व बर्बाद कर दे, सहाबा-ए-किराम और बुज़ुर्गाने दीन के नज़रियात से दूर कर दे। शैतान यही चाहता है कि मुसलमान कुरआने मजीद की आयात का ग़लत मफहूम समझकर अपने दुरुस्त अक़ीदे से वो दूर हो जाए। इसी तरह इस बदबख्त की ख्वाहिश है कि मुसलमान दुनिया की रंगीनियों में बदमस्त हो जाएँ, कब्रो-आख़िरत को भूल जाएँ। याद रखें! दुनिया की मुहब्बतें दुनिया की गर्ज़ के लिए हैं। हमारे चाहने वाले, अपने कांधों पर लाद कर, अंधेरी कब्र में तन्हा छोड़कर चले जाएँगे और हमारा कोई हाल पूछने वाला न होगा। खबरदार! अपने ईमान की हिफाज़त की फिक्र रखें, ख़ौफे खुदा अपने अंदर पैदा करें, इश्के मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

02:51

को दिल में उजागर कीजिए। यक़ीनन इन तमाम चीज़ो के लिए एक माहौल की ज़रूरत है। वह माहौल मिलेगा और बनेगा क़ुरआन से राब्ता बनाने पर। साहिबे क़ुरआन से राब्ता बनाने पर। बुज़ुर्गाने दीन की मुहब्बत फैलाने वालों से राब्ता बनाने पर।

अल्लाह हम सब आशिक़ाने मुस्तफा, का हामी और मददगार हो।

अस्सलामु अलैकुम

इख़्तिताम —> शबे मेअराज
27
रजब 1439 हिजरी